हिंदी दैनिक

द फोटोन न्यूज

सच के हक में...

झारखंड की राजधानी रांची से प्रकाशित

रांची ● शनिवार, 01 अप्रैल 2023 ● वर्ष : 01 ● अंक : 102 ● रांची संस्करण ● पृष्ठ : 12 ● मूल्य : 3 ● www.thephotonnews.com

E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

सुविचार

पुस्तकें जागृत देवता हैं, उनकी सेवा कर के तत्काल वरदान पाया जा सकता है।

रामनरेश त्रिपाठी

तलवार चलातीं नजर आएंगी ऐश्वर्या

शेयर बाजार

सेंसेक्स	:	58,991.52
निफ्टी	:	17,359.75

सर्राफा

सोना	:	5,655
चांदी	:	77.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

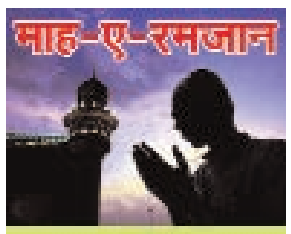

इफ्तार (शनिवार) : 06.07
सेहरी (रविवार) : 04.26

ब्रीफ न्यूज

गुजरात ने सीएसके को 5 विकेट से हराया

नई दिल्ली : डिफेंडिंग चैंपियन गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2023 सीजन की शुरूआत जीत के साथ की है। शुक्रवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात ने चेन्नई को पांच विकेट से हराया। पहले बल्लेबाजी करते हुए सीएसके ने सलामी बल्लेबाज रुतुराज गायकवाड़ के 92 रनों की बदौलत 178 रन बनाये। लेकिन गुजरात ने सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल के अर्धशतक के दम पर चार गेंद शेष रहते मैच जीत ली। हालांकि एक समय मैच रोमांचक मोड़ पर पहुंच गया था, जब गुजरात को जीत के लिए 12 गेंद पर 23 रनों की जरूरत थी। लेकिन राहुल तेवतिया और राशिद खान ने अपनी टीम को जीत दिला दी।

झारखंड में अप्रैल महीने में 11 दिन बंद रहेंगे बैंक

रांची : झारखंड में अप्रैल महीने में बैंक 11 दिन बंद रहेंगे। इसमें रविवार और शनिवार की छुट्टी के साथ सार्वजनिक छुट्टी भी शामिल है। एक अप्रैल से 30 अप्रैल तक 11 दिन बैंक बंद रहेंगे। बैंक अवकाश कैलेंडर के आधार पर एक अप्रैल को ईयरली क्लोजिंग बैंक अकाउंट होता है। चार अप्रैल को महावीर जयंती को लेकर सार्वजनिक छुट्टी है, जिसकी वजह से बैंक बंद रहेंगे। सात अप्रैल को गुड फ्राइडे की छुट्टी होगी। आठ अप्रैल को महीने का दूसरा शनिवार है, इस वजह से बैंक बंद रहेंगे। आठ के बाद सीधे 14 अप्रैल को भीमराव अंबेडकर की जयंती के दिन बैंक बंद रहेंगे। 22 अप्रैल को महीने का चौथा शनिवार है इसलिए बैंक में अवकाश रहेगा। वहीं, 2, 9,16,23 और 30 तारीख को रविवार की साप्ताहिक छुट्टी है।

रांची के बाद देवघर में होगा जी-20 शिखर सम्मेलन

रांची : रांची के बाद अब देवघर में जी-20 शिखर सम्मेलन मई के पहले सप्ताह में होगा। सम्मेलन के क्रम में मैहर गार्डन व जसीडीह सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क में कई इवेंट होंगे। संथाल परगना में आईटी सेक्टर में निवेश पर प्रजेंटेशन होगा। डिजिटल इंडिया के तहत कैसे ग्रास रूट पर बिजनेस व सर्विस के साथ रोजगार के अवसर पर कई प्रजेंटेशन होंगे। साथ ही देवघर से देश भर में हवाई मार्ग व रेल मार्ग की कनेक्टिविटी की सुविधा व पर्यटन उद्योग की संभावनाओं पर चर्चा होगी। मई के प्रथम सप्ताह में देवघर में होने वाले इस सम्मेलन की संभावना को देखते हुए सॉफ्टवेयर टेक्लोनॉजी पार्क के बिहार, झारखंड व ओडिशा जोन के डायरेक्टर सूर्यकुमार पटनायक व ज्वाइंट डायरेक्टर जगरनाथ उरांव अप्रैल के प्रथम सप्ताह में देवघर आ सकते हैं। अधिकारियों की टीम मैहर गार्डन व जसीडीह सॉफ्टवेयर टेक्लोनॉजी पार्क का जायजा लेगी। मैहर गार्डन व जसीडीह सॉफ्टवेयर टेक्लोनॉजी पार्क जाने वाली सड़क का सौंदर्यीकरण व रंग-रोगन कराया जा रहा है।

दुमका में गैंगरेप मामले में चार दोषियों को कोर्ट ने सुनाई आजीवन कारावास की सजा, 32 हजार जुर्माना भी लगाया

विशेष संवाददाता, दुमका।

दुमका में चर्चित गैंगरेप मामले में न्यायालय ने चार आरोपियों को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा एवं जुमार्ना लगाया है। सजा डीजे वन सह चिल्ड्रेन कोर्ट रमेश चंद्रा के न्यायालय ने सुनाया। न्यायालय ने सभी अभियुक्तों को 32-32 हजार जुमार्ना किया।

न्यायालय ने चिल्ड्रेन ट्रायल 4/18 एवं 5/18 में आरोपियों को दोषी करार दिया। न्यायालय ने अलग-अलग धाराओं में दोषी करार देते हुए सजा सुनाया। सजा मुफस्सिल थाना कांड संख्या 97/17 में सुनाई गई। मामला 06 सितंबर, 2017 का है। सजा पाने वालों में मुफस्सिल थाना क्षेत्र के रानीडिंडा गांव निवासी हाबिल टुडू, नवाडीह, तेलियाचक निवासी इमरान अंसारी, कुरबान अंसारी एवं शहबाज अंसारी शामिल है।

न्यायालय ने भादवी की धारा 376 के तहत आजीवन कारावास और 25 हजार जुमार्ना की सजा सुनाया। जुमार्ना की राशि भुगतान नहीं करने पर 2 साल अतिरिक्त सजा का आदेश सुनाया। भादवी की धारा 314 में 15 दिन, 342 में 6 माह, 504 एवं 506 में एक-एक साल, 387 में 4 साल सजा और 5 हजार जुमार्ना किया। जुमार्ना की राशि नहीं देने पर एक साल अतिरिक्त सजा और भादवी की धारा 201 के तहत 2 साल सजा और 2 हजार रुपये जुमार्ना किया। जुमार्ना की राशि नहीं देने के स्थिति में 3 माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। मामले में 18 गवाहों की गवाही गुजरी। बचाव पक्ष से बहस अधिवक्ता सैयद हसन सरोवर, काजल गोराई एवं विनोद मल्लाह एवं अभियोजन पक्ष से सहायक लोक अभियोजन चंपा कुमारी बहस कर रहे थे।

दुमका व्यव्हार न्यालय

नौ साल की बच्ची से दुष्कर्म मामले में एक अन्य को उम्रकैद

दुमका : नौ वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म के आरोपी आयुक्त कार्यालय के कर्मी को न्यायालय ने दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास और जुमार्ने की सजा सुनाया है। सजा डीजे वन रमेश चंद्रा के न्यायालय ने शुक्रवार को मुकर्रर किया है।

न्यायालय ने मुफस्सिल थाना क्षेत्र के चोरकट्टा गांव निवासी आयुक्त कार्यालय कर्मी जयराम सिंह को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास एवं 25 हजार रुपये जुमार्ना किया है। जुमार्ना की राशि अदा नहीं करने के स्थिति में छह माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी।

मामला सितंबर माह वर्ष 2014 का है। पड़ोस में रहने वाली बच्ची को बहला-फुसला का जयराम सिंह ने दुष्कर्म किया। तकलीफ होने पर बच्ची ने परिजनों को पूरा मामले से अवगत कराया। इसके बाद परिजनों ने मुफस्सिल थाना में मामले की लिखित शिकायत दर्ज कराई। वर्ष 2017 में पुलिस कांड संख्या 123/14 के भादवी की धारा 376 पॉक्सो एक्ट 6 तहत आरोपित को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। मामले में 12 गवाहों की गवाही हुई। केस में पैरवी बचाव पक्ष से अधिवक्ता काजल गोरांई और अभियोजन पक्ष से बहस सहायक लोक अभियोजन चंपा कुमारी कर रही थी।

हल्दीपोखर में विसर्जन जुलूस के दौरान दो पक्ष भिड़े, पथराव, सीओ समेत आधा दर्जन घायल

पत्थरबाजी से पनपा विवाद, चार-पांच पुलिसकर्मी भी हुए घायल, प्रशासन ने संभाला मोर्चा

वरीय संवाददाता, जमशेदपुर।

पूर्वी सिंहभूम जिला के कोवाली थाना क्षेत्र के हल्दीपोखर में शुक्रवार को रामनवमी झंडा विसर्जन जुलूस के दौरान जमकर बवाल हो गया। विजय बजरंग अखाड़ा का जुलूस जैसे हल्दीपोखर चौक पर पहुंचा, उसी दौरान एक समुदाय विशेष की ओर से पत्थरबाजी शुरू कर दी गई। इस दौरान भगदड़ में अखाड़ा का झंडा टूट गया। जिससे कमिटी के लोग उग्र हो गए तथा दोनों ओर से तनातनी बढ़ गई। एक समुदाय विशेष की ओर से की गई पत्थरबाजी में पोटका के अंचलाधिकारी इम्तियाज अहमद, हल्दीपोखर की मुखिया देवी कुमारी भूमिज समेत चार-पांच पुलिसकर्मी के अलावा आधा दर्जन लोग घायल हो गए। पुलिसकर्मियों के घायल होने के बाद गुस्साए लोगों ने प्रतिउत्तर में नारेबाजी शुरू कर दी। इस दौरान बीच बचाव कर अखाड़ा जुलूस को दूसरे मार्ग से विसर्जन के लिए कमल तालाब भेजा गया। इधर, घटना में गंभीर रूप से घायल हल्दीपोखर पूर्वी पंचायत की मुखिया देवी कुमारी भूमिज को स्थानीय नर्सिंग होम में ईलाज के लिए भर्ती किया गया, जहां उनके चेहरे में तीन टांके लगे।

रामनवमी झंडा विसर्जन जुलूस के दौरान हंगामे के बाद लोगों को समझाती पुलिस ● फोटोन न्यूज

झंडा का बांस टूटने से हंगामा

घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार, निर्धारित कार्यक्रम और रूट के तहत विजय बजरंग अखाड़ा हल्दीपोखर द्वारा शाम चार बजे बजरंगबली मंदिर से हजारों की भीड़ के बीच झंडा विसर्जन जुलूस निकाला गया। यह जुलूस मुख्य पथ, चावल बाजार, दुर्गा मंदिर, कीर्तन पाड़ा होते हुए तय रुट रंकिणी मंदिर, हल्दीपोखर पूर्वी एवं पश्चिमी पंचायत के वार्डर तक करतब दिखाते हुए पहुंचा। निर्धारित स्थान पर बवाल के दौरान झंडा का अगला भाग तीन-चार फीट टूट गया। इसके टूटते ही लोग उग्र हो गए और जमकर बवाल काटा।

दोषियों पर कार्रवाई की मांग

घटना के बाद रंकिणी मंदिर के सामने अखाड़ा के हजारों लोग आक्रोशित होकर पथराव करने वाले दोषियों पर कार्रवाई की मांग डीएसपी चंद्रशेखर आजाद एवं सीओ इम्तियाद अहमद से करने लगे। घटना की सूचना पाकर ग्रामीण एसपी मुकेश कुमार लुणायत, जिला आपूर्ति पदाधिकारी राजीव रंजन पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और भीड़ से वार्ता कर स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। ग्रामीण एसपी के लगातार समझाने का असर हुआ और यहां से झंडा को कमल तालाब की ओर ले गये।

हावड़ा में दूसरे दिन पथराव के बाद इलाके में धारा 144 लागू

रामनवमी की शोभायात्रा के दौरान भड़की थी हिंसा

एजेंसी, कोलकाता।

पश्चिम बंगाल के हावड़ा में हिंसा के बाद दक्षिण हावड़ा में धारा 144 लगा दी है। जानकारी के अनुसार रामनवमी की शोभायात्रा के दौरान गुरुवार को दक्षिण हावड़ा के शिवपुर के काजीपाड़ा में जमकर हुई हिंसा के बाद प्रशासन ने धारा 144 लगा दिया है। हिंसा मामले को लेकर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस से फोन पर बात कर स्थिति का जायजा लिया। वहीं, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बीजेपी पर जमकर निशाना साधा। साथ ही उन्होंने लोगों से इलाके में शांति बनाये रखने की अपील की।

मालूम हो कि रामनवमी की शोभायात्रा निकाले जाने के दौरान हावड़ा शहर में काजीपाड़ा इलाके में हिंसा हो गयी थी। इसको देखते हुए पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया था। लेकिन, शुक्रवार दोपहर बाद अज्ञात लोगों द्वारा पथराव किया गया। इधर, जिला प्रशासन ने स्थिति सामान्य बनाये रखने के लिए दक्षिण हावड़ा इलाके में धारा 144 लगा दी है।

जुलूस पर फेंके गए थे बम और पत्थर

हर साल की तरह इस साल भी रामनवमी जुलूस निकाला जा रहा था। गुरुवार को जुलूस दक्षिण हावड़ा के शिवपुर स्थित काजीपाड़ा मोड़ से हावड़ा मैदान के लिए निकली थी। करीब दो किलोमीटर आगे आने के बाद जुलूस शिवपुर थाना अंतर्गत फजीर बाजार के पास पहुंचते ही कुछ लोगों द्वारा जुलूस पर बम और पत्थर फेंके गये। आयोजकों ने इसकी सूचना तुरंत वहां तैनात पुलिसकर्मियों को दी। पुलिस वाले इससे पहले कार्रवाई करते उपद्रवियों ने शराब और बीयर की बोतलें फेंकना शुरू कर दिया था। इसके बाद वहां भगदड़ मच गई थी।

पिछली बार 2757 करोड़ रुपये का पास हुआ था बजट, बांड से जुटाए जाएंगे 200 करोड़

नगर निगम का 2801 करोड़ का बजट पारित

वरीय संवाददाता, रांची।

नगर निगम में शुक्रवार को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 2801 करोड़ रुपये का बजट पास किया गया। वित्तीय वर्ष 2022-23 में 2757 करोड़ रुपये का बजट पास किया गया था। महापौर आशा लकड़ा ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2023-24 मे रांची नगर निगम में विभिन्न मदों से 284.53 करोड़ रुपये आय का लक्ष्य रखा गया है। कर से 108.23 करोड़, निगम संपत्ति से किराया / शुल्क एवं उपयोगिता कर से 106.56 करोड़, बिक्री एवं किराया से 3.06 करोड़, राजस्व अनुदान एवं अंशदान से 50.75 करोड़ बैंक एवं इन्वेस्टमेंट से ब्याज 4.63 करोड़, निबंधन शुल्क या इसके क्षतिपूर्ति के लिए सरकारी सहायता से 6.06 करोड़ व अन्य मद से प्राप्तियों का लक्ष्य 4.63 करोड़ रुपये रखा गया है। उन्होंने यह भी बताया कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में शहरी विकास के लिए विभिन्न योजनाओं के तहत केंद्र व राज्य सरकार से कुल 1662.72 करोड़ रुपये प्राप्त होने व इसके विरुद्ध 1660.21 करोड़ वर्ष करने का लक्ष्य रखा गया है। महापौर ने बताया कि राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत शहरी गरीबों के विकास व उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए केंद्र प्रायोजित योजना के तहत व्यक्तिगत ऋण समूह ऋण कौशल विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रम व शहरी गरीबों को संगठित करने के लिए सामुदायिक संरचना का निर्माण करना है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में इस योजना के लिए बजट में 92.61 करोड का प्रावधान किया गया है। साथ ही निगम के आय में वृद्धि के लिए बांड के माध्यम से 200 करोड़ रुपये प्राप्त करने का उद्देश्य है।

बैठक में शामिल मेयर आशा लकड़ा, उप-महापौर संजीव विजयवर्गीय, सांसद महुआ माजी व अन्य।

शहर में पानी और सफाई पर रांची नगर निगम का रहेगा विशेष ध्यान

महापौर का कहना है कि इस वर्ष शहर में पानी और सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। गर्मी आते ही जिस जिस इलाके में पानी की समस्या होती है उस इलाके में बोरिंग कराया जाएगा। इसके अलावा डोर टू डोर कचरा उठाने और पूरे शहर में साफ सफाई पर ध्यान दिया जाएगा। शहर साफ सुथरा दिखता है तो उसकी अलग पहचान बनती है। कई इलाकों से शिकायत आती है कि समय पर सफाई नहीं होती है। इस बार हर इलाके में समय से कचरा उठाया जाएगा और साफ सफाई की जाएगी।

तेज हवा के साथ मूसलाधार बारिश, आज भी रहेगी जारी

वरीय संवाददाता, रांची।

- तेज हवा के कारण कई टूट कर जगह गिरी पेड़ की डालियां
- दो अप्रैल के बाद राजधानी का मौसम रहेगा शुष्क
- बारिश होने से न्यूनतम तापमान में 2 डिग्री की कमी

राजधानी में शुक्रवार को शाम में तेज हवाओं के साथ हुई मूसलाधार बारिश रिकार्ड की गई। शनिवार को भी दोपहर के बाद तेज हवाओं के साथ मौसम खराब होने की संभवना है। मौसम विभाग के चेतावनी के अनुसार 2 से 6 अप्रैल तक मौसम शुष्क रहेगा। झारखंड के मध्य झारखंड और उत्तर-दक्षिणी झारखंड के जिलों में कुछ जगहों पर बारिश रिकार्ड की जा सकती है। शुक्रवार को सुबह से आसमान में नमी देखने को मिल रही थी। दोपहर के बाद मौसम में बदलाव देखने को मिला। शाम होते ही राजधानी में मूसलाधार बारिश रिकार्ड की गई है। इस दौरान कई जगहों पर तेज हवाओं के कारण पेड़ की डालियां सड़क पर गिरी। जिसके कारण शहर में कई क्षेत्रों में घंटों बिजली गुल रही। वहीं शाम को हुई बारिश के कारण न्यूनतम तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की कमी रिकार्ड की गई है। राजधानी का न्यूनतम तापमान दोपहर तक 19 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया था, पर बारिश होने के बाद न्यूनतम तापमान 17 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। वहीं अधिकतम तापमान 33.4 डिग्री रिकार्ड किया गया है। खबर लिखें जाने तक कोई बड़ी घटना घटने की सूचना नहीं मिल थी।

ब्रीफ न्यूज

नवनियुक्त पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण दो अप्रैल को

रांची : जिला ग्रामीण कांग्रेस कमिटी की नवगठित जिला पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी समिति की विस्तारित बैठक सह शपथ ग्रहण समारोह दो अप्रैल को पुरानी विधानसभा सभागार, धुर्वा, में होगी। दौरान नवनियुक्त पदाधिकारियों के बीच कार्य दायित्व का बंटवारा किया जाएगा. साथ ही कार्यक्रमों की रुपरेखा भी तय की जाएगी. इसमें झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के वरिष्ठ नेतागण, प्रदेश महासचिव , प्रदेश सचिव, प्रदेश डेलीगेट एवं प्रखण्ड अध्यक्ष सहित कांग्रेस कोटे के मंत्री मौजूद रहेंगे।

गिरिडीह में 35 करोड़ की लागत से 69 मांझी बथान शेड का होगा निर्माण

गिरिडीह : जिले में 35 करोड 50 लाख की लागत से आदिवासियों के 69 मांझी बथान शेड का निर्माण किया जायेगा। आदिवासी धार्मिक संस्थाओं से जुड़े समुदाय के लोग वर्षों से इसकी मांग करते रहे थे। इसके अलावा गिरिडीह के प्रमुख प्राचीन शिवधाम बाबा दुःख हरण नाथ मंदिर को भी पर्यटन स्थल धार्मिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार ने 97 लाख 25 हजार रुपये की राशि स्वीकृति की है। बताया गया कि गिरिडीह के विधायक झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता सुदीप्य कुमार सोनू की पहल पर दोनों समुदायों के धार्मिक स्थलों के लिए स्वीकृत राशि जिले को भेज दी गई है, जिस पर शीघ्र ही काम शुरू होगा। बताया गया कि जिले के पीरटांड़, गांडेय, बेंगाबाद समेत कुल 69 स्थानों पर मांझी बथान शेडों का निर्माण किया जाना है। इसके तहत पीरटांड़ प्रखंड में सर्वाधिक 31 और गांडेय विधान सभा क्षेत्र में 21 जगहों पर शेड का निर्माण किया जाएगा।

हावड़ा हिंसा : केन्द्रीय गृह मंत्री शाह ने राज्यपाल बोस से की बात

नई दिल्ली : पश्चिम बंगाल के हावड़ा में राम नवमी के अवसर पर शोभा यात्रा के दौरान भड़की हिंसा को लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्य के राज्यपाल सीवी आनंद बोस से शुक्रवार को फोन पर बातचीत कर स्थिति का जायजा लिया। पश्चिम बंगाल के शिबपुर में आज फिर पत्थरबाजी की घटना सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार यहां एक वर्ग ने मंदिरों में तोड़फोड़ की है। सूत्रों का कहना है कि शाह ने शुक्रवार को राज्यपाल बोस सहित भाजपा के वरिष्ठ नेताओं से भी बातचीत कर मामले की जानकारी हासिल की है। पश्चिम बंगाल के भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने इस घटना की जांच कराने के लिए आज शाह को पत्र भी लिखा है। इस पत्र में मजूमदार ने केन्द्रीय गृह मंत्री से मामले की जांच एनआईए से कराने की मांग की है। उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल के हावड़ा में राम नवमी के दिन शोभा यात्रा के दौरान अचानक हिंसा भड़क गई। जिसको लेकर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है।

गांधी जी राष्ट्रपिता कहलाए, वैसे ही राहुल गांधी 'राष्ट्र पुत्र' : शर्मा

रायपुर : पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस विधायक सत्यनारायण शर्मा ने कहा कि, जिस तरह गांधी जी ने अंग्रेजों को हिला दिया था उसी तरह राहुल गांधी ने भाजपा को हिला दिया है। जैसे गांधी जी राष्ट्रपिता कहलाए, वैसे ही राहुल गांधी राष्ट्र पुत्र हैं। राजीव भवन में आज मीडिया से बातचीत करते हुए सत्यनारायण शर्मा ने कहा कि, दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में आज आम आदमी की आवाज उठाना तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज बुलंद करना मानो गुनाह हो गया है। देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी के पूर्व अध्यक्ष एवं 4 बार के सांसद राहुल गांधी जब संसद के अंदर बात करते हैं तो उन्हें बोलने नहीं दिया जाता। उनका माइक बंद कर दिया जाता है। सत्तारूढ़ दल के सांसद बहुमत के अतिवादी चरित्र का प्रदर्शन करते हुये संसद की कार्यवाही नहीं चलने देते। केंद्रीय मंत्री अपने पद की गरिमा को तार-तार करते हुये अनर्गल बयाबाजी करते हैं। जब इन सबसे भी आवाज को नहीं दबा पाते तो एक और षड़यंत्र रच लिया जाता है राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता समाप्त कर देने का।

जाति प्रमाण पत्र नहीं बनाने से कठिनाइयों का सामना कर रहा जनजातीय समुदाय : बंधु तिर्की

संवाददाता, रांची।

झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा कि अधिकारियों की असंवेदनशीलता के कारण जनजातीय समुदाय को जाति प्रमाण पत्र बनाने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है और उन्हें उनका संवैधानिक अधिकार नहीं मिल पा रहा है। वे शुक्रवार को कांग्रेस भवन रांची में पत्रकारों से बात कर रहे थे।

तिर्की ने कहा कि ताजा मामला मुंडा जनजाति की पहली उपजाति भुईहर मुण्डा से जुड़ा है। केन्द्र सरकार की जनजातियों मामले से संबंधित मंत्रालय के सम्बद्ध अधिकारियों के कुछेक असंमजस, संवादहीनता या फिर त्रुटिपूर्ण प्रतिवेदन के कारण मुण्डा जनजाति की उपजाति भुंईहर मुण्डा एवं भुंईहर को अगडी जाति में शामिल कर लिया गया और उसे बिहार की भूमिहार ब्राह्मण जाति से जोड़ कर देखा जाने लगा, जो कि असंगत एवं

कांग्रेस भवन रांची में पत्रकारों से बात कर करते हुए बंधु तिर्की व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

गलत होने के साथ ही व्यावहारिक एवं तथ्यात्मक दृष्टिकोण से भी उपेक्षापूर्ण स्थिति में है।

उन्होंने कहा कि मुंडा जनजाति के तीन लाख से ज्यादा लोग विशेष कर सिमडेगा, गुमला, लातेहार, गढवा और पलामू जिले में निवास करते हैं लेकिन झारखंड में अनुसूचित जाति की श्रेणी में शामिल नहीं होने के कारण भुईहर मुंडा एवं भुईहर समाज के लोगों की पहचान धीरे -धीरे लुप्त होती जा रही है। अब ये लोग सांस्कृतिक, आर्थिक और समाजिक दृष्टिकोण से भी बहुत ही उपेक्षापूर्ण स्थिति में हैं।

तिर्की ने कहा कि इस संबंध में उन्होंने मुख्यमंत्री हेमन्त सोरन को भी पत्र लिखकर भुईहर मुण्डा एवं भुईहर को अनुसूचित जनजाति में शामिल करवाने के लिए न्यायमूर्ति लुकुर कमेटी के प्रतिवेदन व दिशा-निदेशों के अनुरूप विस्तृत आर्थिक एवं सामाजिक सर्वेक्षण करवाने एवं उसका प्रतिवेदन भारत सरकार के रजिस्ट्रार जनरल को भेजने के लिए अनुरोध किया हैं। क्योंकि, अनुसूचित जनजाति में शामिल करवाने के लिए यह अनिवार्य शर्त है।

लोकतंत्र का गला घोंट रही है सरकार कांग्रेस करेगी आंदोलन : सुरेश बैठा

संवाददाता, खूंटी।

केंद्र की मोदी सरकार ने गौतम आडाणी की शेल कंपनी को बीस हजार करोड़ रुपये का गलत ढंग से लाभ पहुंचाया। जब कांगेस के सांसद राहुल गांधी ने इस मुद्दे को संसद में उठाया, तो बातों को ध्यान नहीं दिया गया और उन्हें बोलने नहीं दिया गया। उनकी सदस्यता को ही खत्म कर दिया गया। केंद्र सरकार लोकतंत्र की हत्या कर रही है। कांग्रेस पार्टी इसके विरोध में पूरे देश में लोकतंत्र बचाव कार्यक्रम चला रही है। ये बातें झारखंड प्रदेश कांग्रेस के सचिव सुरेश बैठा और खूंटी जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा ने शुक्रवार को यहां आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही।

कांग्रेस नेताओं ने कहा कि मोदी सरकार द्वारा लोकतंत्र का गला घोटा

बैठक करते सुरेश बैठा व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, एलआइसी के पैसे को निकालक? गौतम अडाणी को दे दिया। उन्होंने सुरेश बैठा और रवि मिश्रा ने कहा कि सरकार चाहे राहुल गांधी और कांग्रेस की आवाज को दबाने का कितना भी प्रयास करे, लेकिन कांग्रेस लोकतंत्र को बचाने के लिए आवाज उठाती रहेगी।

उन्होंने कहा कि सरकार ने राहुल गांधी की बातों का संसद के रिकॉर्ड से ही हटा दिया और उन्हें बोलने का मौका नहीं दिया गया। जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा ने कहा कि लाकतंत्र को बचाने के लिए कांग्रेस की ओर से 26 मार्च से ही सत्याग्रह जैसे आर्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और यह कार्यक्रम दस अप्रैल तक चलेगा।

वाणिज्य कर विभाग ने 2022-23 में अपने निर्धारित लक्ष्य से 2500 करोड़ से अधिक की वसूली की : डॉ. रामेश्वर उरांव

संवाददाता, रांची।

वित्त मंत्री डॉ. रामेश्वर उरांव ने कहा कि वाणिज्य कर विभाग ने चालू वित्तीय वर्ष 2022-23 में अपने निर्धारित लक्ष्य 18,500 करोड़ के विरुद्ध 2500 करोड़ रुपये से अधिक की वसूली कर ली है। वे शुक्रवार को अपने आवास पर पत्रकारों से बात कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि वाणिज्य कर विभाग ने निर्धारित लक्ष्य के विरुद्ध लगभग 114 प्रतिशत की प्राप्ति है। जीएसटी कर प्रणाली के लागू होने के पश्चात मात्र पांच वर्षों तक ही केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को कंपनसेशन का भुगतान किया जाना था जो अवधि चालू वित्तीय वर्ष के प्रथम त्रैमास में ही समाप्त हो गया।

डॉ. रामेश्वर उरांव। ● द फोटोन न्यूज

एक जुलाई 2022 से केन्द्र सरकार की ओर से राज्य सरकारों को कंपनसेशन का भुगतान बन्द कर दिया गया है, फिर भी वाणिज्य कर विभाग में यह उपलब्धि हासिल की है। उल्लेखनीय है कि विगत वित्तीय वर्ष में केंद्र सरकार के कंपनसेशन की राशि को अलग करने के बाद वित्तीय वर्ष 2020-21 में प्राप्त 15741 करोड़ की तुलना में चालू वित्त वर्ष में 18941 करोड़ हुई है, जो लगभग 3200 करोड़ रुपये अधिक की प्राप्ति हुई है। वाणिज्य कर विभाग द्वारा विगत वर्ष 2021-22 में प्राप्त राजस्व संग्रहण की तुलना में।

वित्त मंत्री ने कहा कि वाणिज्य कर विभाग की ओर से कंपनसेशन की कमी को पूरा करने के लिए कुछ नया कदम उठाया गया, जिसके प्रतिफल के रूप में राजस्व संग्रहण में अत्यधिक वृद्धि हुई। विभाग की ओर से मुख्यालय एवं प्रमंडलीय स्तर पर इंटेलिजेंस एंड रेवेन्यू एनालिसिस यूनिट का गठन किया गया, जिनके द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण कर निरीक्षण आदि कार्य किया गया है। इसके अतिरिक्त पांच बड़े अंचलों में स्पेशल टास्क यूनिट का गठन किया गया है, जिनका कार्य बड़े करदाताओं के विवरणियों आदि का अनुश्रवण करना है। साथ ही चालू वित्तीय वर्ष में इंटेलीजिबल आईजीएसटी के रिवर्सल से भी लगभग 563 करोड़ राजस्व की वसूली हुई है। वित्त मंत्री ने कहा कि वाणिज्य कर विभाग द्वारा वैट के ऑनलाइन कर निर्धारण प्रक्रिया को प्रारम्भ किया गया है, जिसमें व्यवसायियों को कार्यालय आने की आवश्यक न के बराबर है। पुराने कराधानों के अंतर्गत बकाया राशि की वसूली एवं विभिन्न न्यायालयों में लंबित वादों को कम करने के लिए कर समाधान योजना इस वित्तीय वर्ष के अन्त में लाई गयी है और अभी तक लगभग 04 करोड़ की प्राप्ति की जा चुकी है और उम्मीद है कि लगभग 500 करोड़ की वसूली आगामी वित्तीय वर्ष में होगी।

वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे

प्रधानमंत्री आज संयुक्त कमांडर सम्मेलन-2023 को करेंगे संबोधित

एजेंसी, नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, प्रधानमंत्री 01 अप्रैल को प्रातः लगभग 10 बजे भोपाल में कुशाभाऊ ठाकरे हॉल में संयुक्त कमांडर सम्मेलन-2023 में सम्मिलित होंगे। उसके बाद लगभग सवा तीन बजे, प्रधानमंत्री भोपाल के रानी कमलापति रेलवे स्टेशन पर भोपाल और नई दिल्ली के बीच चलने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

सैन्य कमांडरों का तीन दिवसीय सम्मेलन 30 मार्च से एक अप्रैल, 2023 तक आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन की विषयवस्तु रेडी, रीसर्जन्ट, रेलेवेंट है। सम्मेलन के दौरान सशस्त्र बलों की युद्धभूमि की संयुक्त तैयारियों के मद्देनजर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जायेगी। सशस्त्र बलों की तैयारी और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दिशा में रक्षा इकोसिस्टम की प्रगति की भी समीक्षा की जायेगी।

सम्मेलन में तीनों सशस्त्र बलों के कमांडर और रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी हिस्सा लेंगे। थल सैनिकों, नौसैनिकों और वायु सैनिकों के साथ समावेशी और अनौपचारिक बातचीत भी होगी। ये सभी चर्चाओं में योगदान करेंगे।

वंदे भारत एक्सप्रेस ने देश में यात्रियों के यात्रा-अनुभव को पुनर्भाषित कर दिया है। नई रेलगाड़ी भोपाल के रानी कमलापति रेलवे स्टेशन और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के बीच चलेगी। यह देश की ग्यारहवीं वंदे भारत एक्सप्रेस होगी। स्वदेशी स्तर पर वंदे भारत एक्सप्रेस को डिजाइन किया गया है, जो उत्कृष्ट यात्रा सुविधाओं से लैस हैं। इस रेलगाड़ी से सभी यात्रियों को तेज, आरामदेह और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव होगा, क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा और आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलेगा।

इजरायल के संसदीय शिष्टमंडल ने राष्ट्रपति मुर्मू से की मुलाकात

भारत में यहूदी समुदायों ने अपनी अनूठी विरासत और परंपराओं को बनाए रखा : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

एजेंसी, नई दिल्ली।

इजरायली संसद नेसेट के स्पीकर अमीर ओहाना के नेतृत्व में इजरायल के एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की।

प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए, राष्ट्रपति ने कहा कि पिछले 30 वर्षों में, दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध बहुआयामी रणनीतिक साझेदारी में विकसित हुए हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि अपने लंबे इतिहास के दौरान, भारत में यहूदी समुदायों ने अपनी अनूठी विरासत और परंपराओं को बनाए रखा और समृद्ध किया है। उन्होंने कहा कि यहूदी लोग भारत के मिले-जुले

इजरायल के संसदीय शिष्टमंडल से मुलाकात करती राष्ट्रपति। ● एजेंसी

समाज का अभिन्न हिस्सा रहे हैं और हमेशा रहेंगे।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारत में इजरायल को उन्नत कृषि और जल प्रौद्योगिकियों में विशेषज्ञता के प्रमुख स्रोत के रूप में जाना जाता है। अनुसंधान और नवाचार में हमारे सहयोग ने 'मेक इन इंडिया' पहल को भी बढ़ावा दिया है। वह पूरे भारत में इजरायल की सहायता से स्थापित 'उत्कृष्टता केंद्रों' की सफलता को देखकर प्रसन्न हैं।

जेपी नड्डा ने तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के भाजपा जिला कार्यालयों का वर्चुअली उद्घाटन किया

एजेंसी, नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शुक्रवार को तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के भाजपा जिला कार्यालयों का वर्चुअली उद्घाटन किया।

इस मौके पर नड्डा ने पार्टी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि इतिहास के पन्नों में यह दर्ज हो गया है कि कार्यालयों की संख्या में भी तेलंगाना और आंध्रप्रदेश पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि आज पूरे देश में भाजपा के लगभग 500 कार्यालय हैं, जो पार्टी कार्यकताओं को समर्पित हैं। साथ ही, पाइपलाइन में अन्य 123 के साथ 108 नए कार्यालय स्थापित किए जा

जेपी नड्डा। ● एजेंसी

रहे हैं।

उन्होंने कहा कि ये भाजपा के कार्यालय नहीं बल्कि संस्कार केंद्र हैं। ये सिर्फ इमारत नहीं है, ये पार्टी के सपनों का विस्तार हैं, ये कार्यकताओं के विचार का विस्तार हैं। उन्होंने कहा कि आज के दिन उन लोगों को भी याद करना चाहिए जिन चार पीढ़ियों ने अपने आप को खपा दिया और छोटे से कमरों में कार्यालय चलाते रहे, दरियों पर बैठ कर कार्यालय की रचना करते रहे।

कांग्रेस पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस कहती है, 'मोदी तेरी कबर खुदेगी'। इस पार्टी ने सारी शर्म खो दी है। भले ही कांग्रेस पार्टी इस स्तर तक सिकुड़ गयी हो, लेकिन इसके नेता अभी भी अहंकार से भरे हुए हैं। वे देश का अपमान करते हैं, ओबीसी समुदाय के बारे में शर्मनाक टिप्पणी करते हैं। यह सब दुर्भाग्यपूर्ण है।

तेलंगाना सरकार पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि बीआरएस पार्टी का मतलब 'भ्रष्टाचार ऋषिवत सरकार' है। यह तेलंगाना सरकार की छवि है। जब तेलंगाना बना था तो सरप्लस स्टेट था लेकिन अब कर्ज में डूबा राज्य है।

उन्होंने कहा कि साल 2014 के बाद से तेलंगाना में राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई लगभग दोगुनी हो गई है। आंध्र प्रदेश में 2 मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक्स पार्क स्वीकृत किए गए हैं, और 2014 के बाद से इस राज्य में भी राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई लगभग दोगुनी हो गई है। भारत को अब 'दुनिया की फार्मेसी' कहा जाता है, यह कई देशों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती दवाएं प्रदान कर रहा है।

नड्डा ने कहा कि भारत 5-जी कनेक्टिविटी शुरू करने वाला सबसे तेज देश है। आज भारत अभूतपूर्व विकास देख रहा है और नए परिवर्तनों को अपना रहा है। देश में 74 हवाई अड्डों को विकसित करने में लगभग 70 साल लग गए, लेकिन मोदी जी के मजबूत नेतृत्व में 74 हवाई अड्डों को विकसित करने में सिर्फ 9 साल लगे।

गिरिडीह सदर विधायक सुदिव्य कुमार सोनू का उत्सव उपवन वनभूमि में होने का आरोप

हाईकोर्ट के निर्देश पर आयुक्त करें जांचः सुरेश साव

संवाददाता, गिरिडीह।

बढ़ते जमीन विवाद को लेकर एक बार फिर भाजपा नेता सह प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुरेश साहु ने गिरिडीह के सदर विधायक सुदिव्य कुमार सोनू पर कड़ा हमला बोला है। शुक्रवार को प्रेसवार्ता कर भाजपा नेता सुरेश साहु ने आरोप लगाते हुए कहा कि हरसिंगरायडीह स्थित सदर विधायक सोनू का भव्य होटल उत्सव उपवन एक वनभूमि प्लॉट खाता नंबर 12 और प्लॉट नंबर0 1001 है।

इसी प्लॉट को लेकर भाजपा कार्यकर्ता सुरेश गुप्ता उर्फ लोहा सिंह ने हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायर किया है। हाई कोर्ट ने भी पीआईएल नंबर 5627-2021 की सुनवाई करते हुए हजारीबाग आयुक्त को निर्देश दिया है कि वो अगले 15 दिनों में उत्सव उपवन

प्रेसवार्ता को संबोधित करते सुरेश साहु। ● द फोटोन न्यूज

प्लॉट की जांच करें और अगर उत्सव उपवन एक वनभूमि प्लॉट है, तो उसका म्यूटेशन रद्द करें।

भाजपा नेता सुरेश साहु ने प्रेसवार्ता के दौरान सदर विधायक सोनू पर आरोप लगाते हुए कहा कि उत्सव उपवन मामले में हाई कोर्ट ने सही तरीके से मामले की जांच का निर्देश हजारीबाग आयुक्त को दिया है। इसे साफ जाहिर होता है कि सदर विधायक द्वारा भूमाफियाओं को संरक्षण दिया जा रहा है। अब तक कई गरीबों को उनके घर से बेघर कर दिया गया है। और बेघरों का मामला भी कोर्ट में ही चल रहा है। क्योंकि सत्ता के दबाव में गिरिडीह प्रशासन और पुलिस विभाग के अधिकारी भूमाफियाओं के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर पा रहे है.

भाजपा प्रतिपक्ष के नेता बाबूलाल मंरांडी ने कड़े शब्दों में जिला प्रशासन और पुलिस विभाग के अधिकारियों को अल्टीमेटम दे चुके है कि सत्ता परिवर्तनशील है। और आज जो सत्ता में है उनका विपक्ष में बैठना तय है। लिहाजा, भूमाफियाओं के खिलाफ कार्रवाई में प्रशासन देरी नहीं करे। नहीं तो राज्य में भाजपा की सरकार बनने के बाद सबसे पहले कार्रवाई भूमाफियाओं पर ही होगा बुलडोजर चलाकर। जिस तरह यूपी में योगी बाबा का बुलडोजर चल रहा है। उसी तर्ज पर गिरिडीह समेत राज्य के भूमाफियाओं पर बुलडोजर चलना तय है.

प्रेसवार्ता के क्रम में भाजपा नेता सुरेश साहु ने कहा कि सदर अचंल में भूमाफियाओं का वर्चस्व इतना बढ़ चुका है कि कुछ दिनों पहले एक मामले में एक केस को हाईकोर्ट खारिज कर चुका है यह कहकर जमीन के बदले में लाखों रुपए की ठगी कोई अपराधिक मामला नहीं बन सकता। भाजपा नेता ने कहा कि इसी तरह बोड़ो के डीलचंद साहु के जमीन को पचंबा के भूमाफिया मो. इश्तियाक उर्फ लालो और उनके गुर्गे सन्नी राईन द्वारा हड़प लिया गया। जबकि डीलचंद साव कई बार अधिकारियों के पास इंसाफ की गुहार लगा चुके है। लेकिन डीलचंद साहु के आवेदन पर जिक्र करना तो दूर उनकी बातों को सत्ता के संरक्षण में किसी ने नहीं सुना। उल्टे डीलचंद साव को पुलिस के प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा। इधर प्रेसवार्ता में भाजपा नेता नागेशवर दास, मनोज मोर्या, राजेश जायसवाल समेत कई मौजूद थे।

पीएम को अपशब्द कहने के मामले में विधायक इरफान अंसारी एमपी-एमएलए कोर्ट से बरी

संवाददाता, दुमका।

जिले की एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट ने शुक्रवार को जामताड़ा के कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी को राहत दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपशब्द कहने के मामले में उन्हें साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया है। यह फैसला एमपी-एमएलए कोर्ट के विशेष न्यायाधीश एसडीजेएम जितेन्द्र राम ने दिया। मामला 27 नवंबर, 2018 का है।

भाजपा नेता तरुण कुमार गुप्ता ने नारायणपुर थाना में केस दर्ज कराया था कि लोकनिया ग्राम में आयोजित एक आम सभा में इरफान अंसारी ने पीएम मोदी के खिलाफ अपशब्द कहा था। पहले यह केस जामताड़ा कोर्ट में दर्ज हुआ था। बाद में इसे एमपी-एमएलए कोर्ट दुमका ट्रांसफर कर दिया गया, जहां इस पर फैसला सुनाया गया।

रिहा किए जाने के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी ने कहा कि क्या भाजपा के नेता कांग्रेस के बारे में अनर्गल बयानबाजी नहीं करते हैं। इसमें हमलोग तो मुकदमा करने नहीं जाते हैं लेकिन भाजपा ने अपने पावर का दुरुपयोग किया है। उन्होंने कहा कि आज जिस तरह राहुल गांधी की सदस्यता रद्द की गई। उनका घर छीन लिया गया। इससे हर जगह जनता दुखी है। कांग्रेस चुप बैठने वाली नहीं है। प्रखंड से लेकर जिला तक आंदोलन किया जाएगा।

इरफान अंसारी ने कहा कि राहुल गांधी गरीबों की आवाज हैं। क्या हमलोग भी अदाणी-अंबानी की दलाली करें। गरीबों की बात करना छोड़ दें। गरीबों का पक्ष लेना अगर गलत है तो जो सजा देना है दीजिए। चाहे हमारी सदस्यता रद्द कर दीजिए या हमें फांसी पर लटका दीजिए, हम लोग चुप बैठने वाले नहीं हैं।

ब्रीफ न्यूज

सरकारी कार्यालयों में आज से लगेगी बायोमेट्रिक हाजिरी

रांची : झारखंड सचिवालय सहित सभी सरकारी कार्यालयों तीन साल के बाद फिर से शनिवार को बायोमेट्रिक हाजिरी शुरू होगी। कार्मिक विभाग ने इसको लेकर सभी को पत्र लिख कर निर्देश दिया है। रोना के कारण 11 मार्च, 2020 से एहतियातन बायोमेट्रिक प्रणाली में ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करने की व्यवस्था को अस्थाई तौर पर अगले आदेश तक के लिए स्थगित कर दिया गया था। इस अवधि में सभी सरकारी कर्मियों की ओर से पूर्व की व्यवस्था के तहत उपस्थिति पंजी में मैनुअल उपस्थिति दर्ज किया जाना अनिवार्य किया गया है। 10 फरवरी को स्वास्थ्य विभाग ने राज में कोविड-19 का संक्रमण नगण्य होने के संबंधित रिपोर्ट देने के बाद बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली में ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करने की निर्धारित प्रक्रिया प्रारंभ करने का मंतव्य दिया है। सरकार ने सम्यक विचार करने के बाद आधार आधारित बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली एक अप्रैल से फिर से प्रारंभ करने का फैसला लिया है।

नगर निगम 13 अप्रैल को करेगा दुकान की बंदोबस्ती

रांची : रांची नगर निगम आर अली बिल्डिंग मेन रोड के सामने की दुकान की बंदोबस्ती करेगा। इसको लेकर तैयारी शुरू कर दी गयी है।13 अप्रैल को इसके लिए बोली लगायी जायेगी। इस संबंध में अपर नगर आयुक्त ने आम सूचना जारी की है। बताया गया कि जो भी व्यक्ति इस दुकान के लिए सर्वाधिक बोली लगायेगा, उसे ही दुकान आवंटित कर दी जायेगी। जानकारी के अनुसार, दुकान की बंदोबस्ती एक साल के लिए की जायेगी।

कोरोना व इंफ्लूएंजा के लिए आज सदर में होगा माक ड्रिल

रांची : झारखंड में कोरोना के 25 एक्टिव केस होने के बाद अब विभाग अलर्ट मोड में है। केंद्र सरकार उपायुक्तों को माक ड्रिल कराने का निर्देश दिया है। जिसके बाद उपायुक्त कोरोना और इन्फ्लूएंजा के मरीजों के इलाज के लिए माक ड्रिल कराएंगे। रांची के सदर अस्पताल में जारी आदेश के बाद शनिवार को माक ड्रिल किया जाएगा। सिविल सर्जन डा विनोद कुमार ने कहा कि अभियान निदेशक द्वारा जारी निर्देश पर सदर अस्पताल में माक ड्रिल किया जाएगा। इसके लिए सुबह 11 बजे समय तय किया गया है, माक ड्रिल के दौरान अस्पताल में कोरोना व इन्फ्लूएंजा से इलाज और अस्पताल में उपलब्ध सभी संसाधनों को तैयारी का आकलन किया जाएगा।

सदर अस्पताल में अंतिम दिन देर रात तक निपटाए गईं फाइल

रांची : वित्तीय वर्ष के अंतिम दिन शुक्रवार को सदर अस्पताल के कार्यालय में देर रात तक काम चलता रहा। आयुष्मान योजनाओं से जुड़े बिल को पास करने सहित अन्य पेंडिंग बिल को सिविल सर्जन ने पास कर काम निपटाया। बताया गया कि अगर अंतिम दिन यदि कोई बिल फंसी रह जाती है तो फिर पास करना मुश्किल होगा। इसी सिलसिले में सारी कागजात की जांच कर बिल पास किया गया, इसमें कार्यालय के कई कर्मी भी देर रात तक जुटे रहें।

इग्नू का 36वां दीक्षांत समारोह तीन अप्रैल को

रांचीः इग्नू का 36वां दीक्षांत समारोह तीन अप्रैल को होगा। मुख्य कार्यक्रम में नई दिल्ली में होगा जबकि रांची क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से नामकुम स्थित कन्वेंशन सेंटर में होगा।

atom美 ATOMY INDIA
RANCHI TEAM WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24, Roshpa Roshpa Tower, Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

धुर्वा स्थित निर्माणाधीन झारखंड हाईकोर्ट को लेकर एडवोकेट एसोसिएशन की जनहित याचिका पर हुई सुनवाई

राज्य सरकार ने बताया, हाईकोर्ट का नया भवन 30 अप्रैल तक हस्तांतरित किया जाएगा

झारखंड हाईकोर्ट

विशेष संवाददाता, रांची।

धुर्वा स्थित निर्माणाधीन झारखंड हाईकोर्ट के भवन निर्माण एवं उसमें वकीलों के लिए उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं को लेकर एडवोकेट एसोसिएशन की जनहित याचिका की सुनवाई शुक्रवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ को राज्य सरकार की ओर से बताया गया कि हाईकोर्ट का नया भवन हाईकोर्ट को 30 अप्रैल को हस्तांतरित कर दिया जाएगा। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 4 मई निर्धारित की है। सुनवाई के दौरान भवन निर्माण सचिव कोर्ट में सशरीर उपस्थित थे। सरकार की ओर से कोर्ट को अंडरटेकिंग देकर बताया गया कि 30 अप्रैल तक हाईकोर्ट का धुर्वा स्थित निमार्णाधीन भवन का निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा और हाईकोर्ट को हैंडओवर कर दिया जाएगा। सुनवाई के दौरान खंडपीठ ने कहा एसोसिएशन की जो भी समस्याएं हैं उसे हाईकोर्ट की कमेटी और एसोसिएशन आपस में बैठकर उसका निदान निकालेंगे। पूर्व की सुनवाई सुनवाई के दौरान अधिवक्ताओं की 4 सदस्य वाली समिति ने नए हाईकोर्ट भवन में उपलब्ध सुविधाओं का अवलोकन करने के बाद कोर्ट के समक्ष व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। जिसके बाद कोर्ट ने मामले में संबंधित पक्षों को आपस में बातचीत कर अधिवक्ताओं की समस्याओं का निदान निकालने का निर्देश दिया था। पूर्व में कोर्ट ने भवन निर्माण विभाग द्वारा दायर शपथ पत्र पर असंतोष जताते हुए कहा था कि इसमें नए हाईकोर्ट भवन में सुविधाओं के बारे में जानकारी नहीं दी गई है।

राजीव कुमार और अमित अग्रवाल के खिलाफ आरोप गठन पर सुनवाई 19 को

रांची : मनी लाउंड्रिंग मामले के आरोपी वकील राजीव कुमार एवं कारोबारी अमित अग्रवाल ईडी के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की कोर्ट में हाजिर हुए। कोर्ट ने उनकी न्यायिक हिरासत की अवधि बढ़ाते हुए उनके आरोप गठन की तिथि 19 अप्रैल निर्धारित की है। 6 अप्रैल को राजीव कुमार और अमित अग्रवाल के डिस्चार्ज पिटिशन पर कोर्ट अपना आदेश सुनाएगी। 27 मार्च को कोर्ट ने दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी होने के बाद मामलों का फैसला सुरक्षित रखा है। बता दें कि ईडी ने 13 अक्टूबर 2022 को राजीव कुमार एवं अमित अग्रवाल के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था। मामले में अब उनके खिलाफ आरोप गठन होना है। इसके पहले उनकी ओर से डिस्चार्ज पिटिशन दाखिल की गई है।

गोला गोलीकांड मामले में जवाब दाखिल करने का निर्देश

- हाईकोर्ट में गोला गोलीकांड के एक मामले में पूर्व विधायक ममता देवी और राजीव जायसवाल की सजा को चुनौती देने वाली क्रिमिनल अपील की पर हुई सुनवाई

रांची : झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस नवनीत कुमार की कोर्ट में शुक्रवार को गोला गोलीकांड के एक मामले में पिछले साल रामगढ़ की पूर्व विधायक ममता देवी और राजीव जायसवाल को मिली पांच साल की सजा को चुनौती देने वाली क्रिमिनल अपील की सुनवाई हुई। साथ ही दोनों सजायाफ्ता की ओर से अदालत से लगाई गई जमानत की गुहार पर भी सुनवाई हुई। मामले में कोर्ट ने ममता देवी एवं राजीव जायसवाल के अधिवक्ता का पक्ष सुनने के बाद राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई पांच अप्रैल को होगी। सरकार की ओर से अधिवक्ता मनोज कुमार एवं भोलानाथ ओझा ने पैरवी की। ममता देवी की ओर से अधिवक्ता एके साहनी और राजीव जायसवाल की ओर से अधिवक्ता एके कश्यप ने पैरवी की। इस मामले में 13 दिसंबर, 2022 को हजारीबाग जिला जज चतुर्थ कुमार पवन की अदालत ने ममता देवी एवं अन्य को पांच साल की सजा सुनाई थी और उसपर 10 हजार का जुमार्ना भी लगाया गया था। आठ दिसम्बर को विधायक ममता देवी दोषी करार दिये जाने के बाद पुलिस हिरासत में ले लिया गया था। एमपी-एमएलए की विशेष कोर्ट ने 307, आर्म्स एक्ट सहित आधा दर्जन धाराओं में ममता देवी समेत 13 आरोपियों को दोषी करार दिया था, जिसके बाद इन्हें जेपी कारा भेज दिया गया था।

बाघमारा विधायक ढुल्लू महतो की हाईकोर्ट में हुई गवाही

रांची : झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिसअनिल कुमार चौधरी की कोर्ट में शुक्रवार को बाघमारा विधायक ढुल्लू महतो के निर्वाचन को चुनौती देने वाली जलेश्वर महतो की चुनाव याचिका पर सुनवाई हुई। मामले में विधायक ढुल्लू महतो की गवाही हुई। जलेश्वर महतो की ओर से गवाह संख्या एक शत्रुघ्न महतो को फिर से गवाही करने के लिए आवेदन दिया गया। इस पर ढुल्लू महतो की ओर से जवाब के लिए समय मांगा गया है। कोर्ट ने मामले की सुनवाई 28 अप्रैल निर्धारित की है। ढुल्लू महतो की ओर से गवाही में बताया गया कि विधानसभा चुनाव के दौरान बाघमारा विधानसभा क्षेत्र में मतदान और मतगणना विधि सम्मत हुआ था।

वर्ष 2014 में आलोक चौरसिया ने जन्मतिथि में करवा लिया था सुधार

डालटनगंज विधायक के निर्वाचन को चुनौती देने वाली याचिका पर हुई सुनवाई

रांची : डालटनगंज विधायक आलोक चौरसिया के निर्वाचन को चुनौती देने वाली चुनाव याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में विधायक आलोक चौरसिया की ओर से वरीय अधिवक्ता वीपी सिंह ने कोर्ट को बताया कि रिटर्निंग ऑफिसर के द्वारा आलोक चौरसिया का नाम नॉमिनेशन पत्र एक्सेप्ट किया गया था, जो सही निर्णय था। आलोक चौरसिया ने वर्ष 2014 में अपना जन्मतिथि में सुधार करवा लिया था। उनका जन्म तिथि 1995 से 1988 किया गया था। आलोक चौरसिया की ओर से बहस जारी रही। अगली सुनवाई 28 अप्रैल को होगी। सुनवाई के दौरान केएन त्रिपाठी की ओर से सुप्रीम कोर्ट के वरीय अधिवक्ता एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद, हाईकोर्ट के अधिवक्ता महेश तिवारी एवं अभिषेक कुमार दुबे ने पैरवी की। पिछली सुनवाई में केएन त्रिपाठी की ओर से बहस में कहा गया था कि झारखंड विधानसभा चुनाव के नामांकन के समय में आलोक चौरसिया की उम्र 25 वर्ष से कम थी। इसलिए वे चुनाव लड़ने के योग्य नहीं थे। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति अनिल कुमार चौधरी की कोर्ट ने शुक्रवार को मामले की सुनवाई की। दरअसल, कांग्रेसी नेता केएन त्रिपाठी ने चुनाव याचिका दाखिल कर कहा था वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव के नामांकन के दौरान आलोक चौरसिया की उम्र 25 वर्ष पूरी नहीं हुई थी। इस कारण वे चुनाव लड़ने के अयोग्य थे। इसलिए उनका निर्वाचन रद्द किया जाए।

देवघर एम्सः सांसद की याचिका पर हुई सुनवाई, हाईकोर्ट ने मांगी स्टेटस रिपोर्ट

रांची : देवघर, एम्स में बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर सांसद निशिकांत दुबे की जनहित याचिका की सुनवाई शुक्रवार को झारखंड हाईकोर्ट में हुई। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने राज्य सरकार को स्टेटस रिपोर्ट जारी करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने मामले में देवघर एम्स के निदेशक को प्रतिवादी बनाया है। कोर्ट ने उनसे पूछा है कि देवघर, एम्स में आवश्यक बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराने के लिए उनको किन-किन चीजों की आवश्यकता पड़ेगी, इसकी जानकारी दें। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 3 मई निर्धारित की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता दिवाकर उपाध्याय एवं केंद्र सरकार की ओर से अधिवक्ता प्रशांत पल्लव ने पैरवी की। याचिका में सांसद की ओर से कहा गया

है देवघर एम्स में कई बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। उनकी ओर से कोर्ट से देवघर एम्स के लिए पर्याप्त बिजली, पानी, पहुंच सड़क, फायर ब्रिगेड वाहन आदि की सुविधा उपलब्ध कराने का आग्रह कोर्ट से किया गया है।

स्कूटी और बाइक की टक्कर में पुलिस जवान समेत दो की मौत

क्राइम रिपोर्टर, रांची।

लालपुर थाना क्षेत्र स्थित डिस्टलरी पुल के पास गुरूवार की देर रात स्कूटी और बाइक में टक्कर होने से पुलिसकर्मी कमल तिवारी और निर्मल तिग्गा की मौत हो गई। पुलिस ने दोनों के शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव स्वजनों के हवाले कर दिया। लालपुर थानेदार ने बताया कि रात एक बजे दोनों वाहर आमने सामने टकरा गए। बाइक में कमल तिवारी और अभिषेक कुमार सवार थे। अभिषेक कुमार रांची जिला बल का जवान है और कमल दुमका जिला बल का जवान था। वहीं स्कूटी में निर्मण अपनी पत्नी के साथ सवार था। अभिषेक और महिला गंभीर रुप से जख्मी है। टक्कर होन के बाद लालपुर पुलिस सभी को रिम्स ले गई लेकिन डाक्टरों ने कमल तिवारी और निर्मल को मृत घोषित कर दिया। पुलिस का कहना है कि घटना स्थल के समीप पीसीआर के जवान मौजूद थे। इस वजह से सभी को तुरंत रिम्स ले जाया गया लेकिन दो लोगों की जान चल गई। ट्रैफिक पुलिस का कहना है कि लोगों को हेलमेट पहने के लिए बार बार जागरुक किया जाता है। अभियान चलाकर जुमार्ना भी वसूला जाता है। इसके बाद भी कई लोग हेलमेट नहीं पहनते हैं। लापरवाही से गाड़ी चलाते हैं और अपनी जान गंवा देते हैं। पुलिस का कहना है कि अब रात के वक्त भी बिना हेलमेट के पकड़े जाने पर लोगों से जुमार्ना वसूला जाएगा।

किसी ने नहीं पहना था हेलमेट

पुलिस का कहना है कि स्कूटी और बाइक पर सवार लोगों में किसी ने हेलमेट नहीं पहना था। कमल और निर्मण हेलमेट पहने रहते तो शायद उनकी जान बच सकती थी। टक्कर होने पर दोनों मृतकों के सिर पर गंभीर चोट लग गई जिससे उनकी मौत हो गई। मौके पर मौजूद जवानों ने बताया कि स्कूटी और बाइक सवार दोनों तेज गति में थे। बाइक सवार कोकर से लालपुर की ओर जा रहे थे वहीं स्कूटी सवार लालपुर से कोकर की तरफ जा रहे थे।

रिम्स में मरीजों को मिलेगी राहत, 3005 नर्स की होगी नियुक्ति, तीनों शिफ्ट में लगाई जाएगी ड्यूटी

व्यवस्था सुधारने को लेकर प्रबंधन रेस, टाइम से मिलेगी इंजेक्शन और दवाई

वरीय संवाददाता, रांची।

राज्य के सबसे बड़े हॉस्पिटल रिम्स में व्यवस्था सुधारने को लेकर प्रबंधन रेस है। वहीं स्वास्थ्य मंत्री ने भी आश्वस्त किया है कि जल्द ही हॉस्पिटल में मरीजों को सारी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी। इस कड़ी में हॉस्पिटल में 3005 नर्स की नियुक्ति की मंजूरी मिल गई है। जिससे कि तीनों शिफ्ट में पर्याप्त संख्या में नर्सों की ड्यूटी हॉस्पिटल में लगाई जाएगी। जिसका फायदा इलाज के लिए आने वाले मरीजों को मिलेगा। टाइम से उन्हें दवाएं और इंजेक्शन मिलेगी। बताते चलें कि फिलहाल रिम्स में 700 के करीब नर्स है। हॉस्पिटल के इनडोर में हमेशा 2000 मरीज अलग-अलग विभागों में एडमिट रहते है। जिनकी तुलना में नर्सों की संख्या काफी कम थी। इस वजह से मरीजों को परेशानी होती थी। कुछ वार्डों में दवाएं भी टाइम से नहीं मिल पा रही थी। वहीं वैक्सीनेशन का भी काम प्रभावित होता था। अब नर्सों की बहाली से मरीजों को राहत हो जाएगी। इंडियन नर्सिंग काउंसिल (आइएनसी) के नियमानुसार नर्सिंग कैटेगरी के पदों का सृजन किया गया है। नियमों का आकलन करने के बाद मैनपावर को बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए एक सेलेक्शन कमिटी का गठन किया जाएगा। अनुबंधकर्मियों को इसमें प्राथमिकता दी जाएगी।

फाइल फोटो

इन पदों पर होनी है बहाली

- चीफ नर्सिंग सुपरिंटेंडेंट – 1
- नर्सिंग सुपरिंटेंडेंट – 2
- असिस्टेंट नर्सिंग सुपरिंटेंडेंट – 8
- नर्सिंग सिस्टर – 137
- स्टाफ नर्स – 2857

राहुल कुमार सिन्हा ने की जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट की शासी परिषद की बैठक

रॉयल्टी राशि से जिला के खनन प्रभावित क्षेत्रों में विकास करने का रांची डीसी ने दिया निर्देश

वरीय संवाददाता, रांची।

रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने शुक्रवार को समाहरणालय स्थित सभागार में जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट की शासी परिषद की अहम बैठक की। बैठक में वर्ष 2023-24 में प्राथमिकता सेक्टर में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कौशल विकास और महिला बाल विकास की योजनाओं को शामिल करने का निर्देश दिया गया। समिति द्वारा निर्णय लिया गया कि रॉयल्टी की राशि से रांची जिला के खनन प्रभावित क्षेत्रों में विकास एवं कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन कराया जाये। डीएमएफटी योजना के अंतर्गत अन्य प्राथमिकता के क्षेत्र में पथ पुलिया सिंचाई की योजना शामिल करने का निर्देश संबंधित अधिकारी को दिया गया। साथ ही जिला के दो खनन पट्टाधारी को नामित करने के प्रस्ताव पर संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया गया।

बैठक करते रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा ● फोटोन न्यूज

बैठक में लिये गये अन्य फैसले

- डीसी ने 4-5 वर्षों में शिक्षा परियोजना में क्या-क्या कार्य हुए हैं, इसकी सूची बनाने के लिए संबंधित अधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।
- डीएमएफटी परियोजना के तहत जो भी स्कूल भवन बनते हैं। वहा मूलभूत सेवाओं पर ध्यान देने का निर्देश दिया।
- विद्यालयों का सौंदर्यीकरण बेहतर रूप से करने के लिए संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया।
- आंगनबाड़ी केंद्रों में किचन गार्डन बनाने का प्रस्ताव बना कर देने के लिए संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया।
- खलारी कोलियरी एवं इसके आसपास क्षेत्र में प्रदूषण कम करने का निर्देश।
- मैकलुस्कीगंज में डाक बंगला का 2017-18 में नवनिर्माण कराया गया था। उस भवन का उपयोग आजीविका सर्वजन के रूप में शुरू करने का निर्देश दिया।

राज्य में पांव पसार रहा कोरोना 13 दिन में पांच गुना बढ़े मरीज

पांच से बढ़कर 25 हुए संक्रमित

वरीय संवाददाता, रांची।

झारखंड में 13 दिनों के अंदर कोरोना के मरीजों की संख्या 5 गुना बढ़ गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 18 मार्च को झारखंड में कोरोना के मरीजों की संख्या 5 थी। अब यह आंकड़ा बढ़ कर 25 तक पहुंच गया है। वहीं देश में संक्रमितों की संख्या में बड़ा इजाफा हुआ है। सक्रिय मरीजों की संख्या 15208 पर पहुंच गयी है। इधर, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से निर्देश दिया गया है कि 10 और 11 अप्रैल को देश भर में मॉक ड्रिल किया जाएगा। इस दौरान अस्पतालों में बेड, आईसीयू बेड, दवा, मैनपावर समेत जरूरी संसाधनों की व्यवस्था को देखा जाएगा। इस ऐलान से पूर्व झारखंड स्वास्थ्य महकमा कोरोना के बढ़ते मामले को लेकर अलर्ट पर है। 27 मार्च को एनएचएम के अभियान निदेशक भुवनेश प्रताप सिंह ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की बैठक के दौरान यह निर्देश सभी जिलों के उपायुक्तों को दिया है।

मॉक ड्रिल के लिए सभी उपायुक्तों को दिया गया निर्देश

अभियान निदेशक भुवनेश प्रताप सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान मॉक ड्रिल कराने का निर्णय लिया गया है। इस बाबत राज्य के सभी जिलों के उपायुक्त को कोरोना और इन्फ्लूएंजा के मरीजों के इलाज के लिए मॉक ड्रिल कराने का निर्देश दिया गया है।

उपायुक्त की अध्यक्षता में हुई जिला पर्यावरण एवं प्रदूषण नियंत्रण समिति की बैठक

प्रदूषण नियंत्रण मानकों का पालन नहीं करने वाले कारखानों पर करें कड़ी कार्रवाई : डीसी

बैठक में उपस्थित उपायुक्त माधवी मिश्रा व अन्य अधिकारी। ● द फोटोन न्यूज

संवाददाता, रामगढ़।

शुक्रवार को उपायुक्त रामगढ़ सुश्री माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में समाहरणालय सभाकक्ष में जिला पर्यावरण एवं प्रदूषण नियंत्रण समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक के दौरान सबसे पूर्व उपायुक्त ने क्षेत्रीय पदाधिकारी प्रदूषण नियंत्रण पर्षद से प्रदूषण नियंत्रण को लेकर उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों व चलाए गए जांच अभियान के उपरांत की गई कार्रवाई की जानकारी ली। इस दौरान उपायुक्त ने कार्यों पर असंतोष जाहिर करते हुए क्षेत्रीय पदाधिकारी प्रदूषण नियंत्रण पर्षद को कार्यों को गंभीरता से लेने एवं प्रदूषण नियंत्रण के खिलाफ कड़े कदम उठाने का निर्देश दिया। इसके लिए उपायुक्त ने वैसे सभी कारखाने जो प्रदूषण नियंत्रण नियंत्रण मानकों का पालन नहीं कर रहे है उनके खिलाफ जांच अभियान चलाकर कड़ी कार्रवाई करने एवं कार्रवाई से संबंधित प्रतिवेदन जिला स्तर पर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

बैठक के दौरान वन प्रमंडल पदाधिकारी ने जिला खनन पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारियों को उनके उनके क्षेत्रों में जांच अभियान चलाने एवं अवैध क्रेशरों व अन्य अवैध माइनिंग गतिविधियों पर रोक लगाने का निर्देश दिया। इस दौरान उपायुक्त ने जांच के क्रम में अवैध पाए जाने के उपरांत अवैध क्रेशरों को त्वरित ध्वस्त करते हुए कानूनी कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

बैठक के दौरान वन प्रमंडल पदाधिकारी ने सभी अंचल अधिकारियों को उनके उनके क्षेत्रों में अवैध खनन व प्रदूषण संबंधित गतिविधियों को नजर चलाए गए जांच अभियान एवं उन में की गई कार्रवाई से संबंधित प्रतिवेदन ससमय जिला स्तर पर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

बैठक के दौरान अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी-सह-कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद, जिला परिवहन पदाधिकारी, क्षेत्रीय पदाधिकारी प्रदूषण नियंत्रण पर्षद, कार्यपालक दंडाधिकारी सह प्रभारी सामान्य शाखा, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता विद्युत मंडल रामगढ़, अंचल अधिकारियों सहित अन्य उपस्थित थे।

खूंटी के तोरपा में किया गया धरम दयाल इंटर कॉलेज का उद्घाटन

फीता काटकर उद्घाटन करते विधायक। ● द फोटोन न्यूज

संवाददाता, खूंटी।

तोरपा प्रखंड के सुदूरवर्ती गांव सारिदकेल में धरम दयाल इंटर कॉलेज का उद्घाटन शुक्रवार को खूंटी के विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा और तोरपा के विधायक कोचे मुंडा ने फीता काटकर किया।

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राज्य के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि अब विद्यार्थियों को इंटर की पढ़ाई के लिए दूसरी जगह जाना नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि आज हम सबों को संकल्प लेना होगा कि इस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित नहीं रहेगा। खूंटी को हमें शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित करना है। विशिष्ट अतिथि विधायक कोचे मुंडा ने कहा कि सारितकेल गांव में इंटर कॉलेज खोलकर समाजसेवी रामदयाल साहू ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही एक ऐसा हथियार है, जो हमें अज्ञानता से निकालती है और गरीबी से लड़ने का सबसे बड़ा हथियार भी शिक्षा ही है।

इस मौके पर विद्यालय के संस्थापक धर्म दयाल साहू, कॉलेज के प्राचार्य अंजनी कुमार मिश्र, तोरपा के अंचलाधिकारी सच्चिदानंद वर्मा, भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष काशीनाथ महतो, रोड़ो पंचायत के मुखिया बुधराम कंडुलना, ग्राम प्रधान मंगल मुंडा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

लपंगा पंचायत कोल कंपनी में भव्य भंडारा का आयोजन, दर्जनों लोगों ने ग्रहण किया प्रसाद

भक्ति आयोजनो से क्षेत्र में हरियाली-खुशहाली का आगमन होता है : अनूप ठाकुर

प्रसाद का वितरण करते भाजपा नेता अनूप ठाकुर। ● द फोटोन न्यूज

भुरकुंडा (रामगढ़)।

रामनवमी के पावन अवसर पर लपंगा पंचायत के गणेश मंडप कोल कंपनी के तत्वावधान में भव्य भंडारा का आयोजन किया गया। भंडारा का शुभारंभ मुख्य अतिथि भाजपा भदानीनगर मंडल उपाध्यक्ष अनूप कुमार ठाकुर व समाजसेवी जोहरन करमाली ने श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण कर किया।

भंडारा में दर्जनों महिला-पुरूष व श्रद्धालु बच्चों ने प्रसाद ग्रहण किया। मौके पर मुख्य अतिथि अनूप ठाकुर ने कहा कि ऐसे आयोजनों से क्षेत्र में भक्ति का संचार बढ़ता है। समय-समय पर भक्ति आयोजन होते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि भक्ति आयोजनों से हरियाली-खुशहाली के साथ सुख-समृद्धि का भी आगमन होता है। कार्यक्रम को सफल बनाने में गणेश मंडप कमेटी के राहुल कुमार शांडिल, कृष्णा प्रसाद, सूरज सिन्हा, रविंद्र कुमार, अजय कुमार, मनीष कुमार, रंजीत कुमार, राकेश महतो, इंदर सिंह, रामकिशुन पासवान, ओम प्रकाश गुप्ता, रामचंद्र सिंह, भारत बेदिया, दीपक सिन्हा, रवि गिरी, तुषार कुमार, अनिल बेदिया, राजा पंडित आदि का विशेष योगदान रहा।

तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन

कार्यशाला में मौजूद आचार्य एवं अन्य.। ● द फोटोन न्यूज

रजरप्पा : सीसीएल रजरप्पा क्षेत्र स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में चल रहे तीन दिवसीय वार्षिक आचार्य कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हुआ। कार्यशाला में नवीन सत्र के लिए आचार्य भारती का गठन किया गया तथा विभिन्न विभागों का दायित्व आचार्यों को दिया गया। कार्यशाला के समापन सत्र में प्राचार्य उमेश प्रसाद ने एक आदर्श आचार्य के गुणों का उल्लेख करते हुए अपने संदेश में कहा कि कार्यशाला में चिंतन-मनन के आधार पर नवीन सत्र 2023-24 में आचार्य नवीन उत्साह एवं ऊर्जा के साथ भैया-बहनों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करें। इसके पहले दीप प्रज्वलन एवं वंदना की गई। उन्होंने एक अप्रैल से हवन-यज्ञ के साथ नवीन सत्र प्रारंभ की बात कही। कार्यशाला का समापन शांति मंत्र के साथ हुआ। समापन सत्र में सभी आचार्य-आचार्या उपस्थित थे।

आकर्षक झांकी के लिए प्रथम पुरस्कार से संयुक्त रूप से नवाजे गए चिकोर व लादी

आपसी भाईचारगी व अमन चैन का संदेश देता है यह आयोजन : मो. जावेद हुसैन

बेहतर झांकी के लिए ट्रॉफी देकर पुरस्कृत करते अतिथि। ● द फोटोन न्यूज

भुरकुंडा (रामगढ़)।

रामनवमी अखाड़ा लक्ष्मी टॉकीज मैदान में गुरूवार की रात्रि बेहतर झांकी के प्रदर्शन को ले युवा संघर्ष समिति शिवनगर चिकोर व महावीर मंडल लादी को मेडल व प्रशस्ति-पत्र देकर संयुक्त रूप से प्रथम पुरस्कार से अतिथियों द्वारा नवाजा गया।

वहीं लपंगा बस्ती को द्वितीय व अंबेडकर क्लब लादी व महुआ टोला को संयुक्त रूप से झांकी के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जबकि अनुशासन के लिए भुरकुंडा संकट मोचन मंदिर को प्रथम, कुरसे को द्वितीय व महुआ टोला रामनवमी समिति को तृतीय पुरस्कार मिला। वहीं कला-प्रदर्शनी के लिए कुरसे को प्रथम, अंबेडकर क्लब लादी को द्वितीय व संकट मोचन मंदिर को तृतीय पुरस्कार मिला।

जबकि सबसे बड़े महावीरी पताका के लिए शिव मंदिर चिकोर को प्रथम, नवयुवक संघ भुरकुंडा को द्वितीय व देवरिया को तृतीय पुरस्कार मिला। इन सबों को मुख्य अतिथि रामगढ़ एसडीएम मो. जावेद हुसैन, बड़कागांव विधायक अम्बा प्रसाद, आजसू के केंद्रीय महासचिव सह बड़कागांव विधानसभा प्रभारी रोशनलाल चैधरी, पतरातू प्रखंड प्रमुख कौशल्या देवी, जिप उपाध्यक्ष रीता देवी, प्रखंड उपप्रमुख बबीता पांडेय, सीओ शिव शंकर पांडेय, पतरातू एसडीपीओ डॉ. बीरेंद्र कुमार चैधरी आदि अतिथियों द्वारा मेडल, ट्रॉफी व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मौके पर मुख्य अतिथि रामगढ़ एसडीएम मो. जावेद हुसैन ने कहा कि रामनवमी मेला में उमड़ा जनसैलाब यह साबीत करता है कि भुरकुंडा का रामनवमी जिले ही नही राज्य में अपनी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने ने सबों को रामनवमी पर्व की बधाई देते हुए क्षेत्र में हमेशा अमन-चैन व एकता-भाईचारगी का माहौल बनाए रखने की अपील की।

मेदिनीनगर में पुरस्कार वितरण समारोह

पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित लोग। ● द फोटोन न्यूज

संवाददाता, मेदिनीनगर।

शहर स्थित छहमुहान चौक के पास शुक्रवार को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ। समारोह की अध्यक्षता जनरल अध्यक्ष जुगल किशोर और संचालन महामंत्री विजय ओझा ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में आरक्षी अधीक्षक चंदन सिन्हा मौजूद रहे।

समारोह में सर्वश्रेष्ठ रथ का प्रथम पुरस्कार उपकार संघ हमीदगंज विश्व संघ क्लब जिला स्कूल और न्यू सुरभि क्लब हमीदगंज को दिया गया। द्वितीय पुरस्कार न्यू एकता स्टार क्लब हमीदगंज संस्कार क्लब नावाटोली और भारत सेवक संघ को दिया गया।

तीसरा पुरस्कार न्यू सांस्कृतिक क्लब विश्व शांति क्लब एवं हिंदू सेना संघ को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ मूर्ति का प्रथम पुरस्कार महावीर युवा मंडल ओम शांति क्लब और जय बजरंग संघ को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ मूर्ति का दूसरा पुरस्कार सांस्कृतिक कल्ब दुकानदार संघ जय विजय संघ और सर्वश्रेष्ठ मूर्ति का तीसरा पुरस्कार श्री श्री लक्ष्मी नारायण समिति वीर भगत सिंह और महावीर संघ को दिया गया।

कला का प्रदर्शन करने वाले परमेश्वर राम, जोगीराम मल्लू, रजक नागो कुमार, अजय कुमार, राजा कुमार ,श्रेष्ठ कुमार, छम छम कुमार, आदित्य कुमार, मिथिलेश सोनी, राम लखन साहू, अवधेश प्रजापति, सुनील कुमार, मुनीराम श्यामू, रंजन कृष्णा, प्रसाद सोनी, योगेश्वर राम, अजय कुमार, नागौर राम, रंजीत कुमार, विजय प्रेम चंद्रवंशी, राज कुमार चंद्रवंशी, प्रेम राम, आशीष कुमार, रामप्रवेश, डब्लू सरस्वती, कल्लू राम, सूरज कुमार, छोटू चंद्रवंशी, शुभ राज, आशीष, दिलीप, जितेंद्र गुप्ता, और राजेंद्र पाठक को अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए पुरस्कार दिया गया।

उत्कृष्ट रथ का पुरस्कार मां देवी संघ, महाकाल संघ, नमो नमो दुर्गे संघ, न्यू बाल संघ, क्रांति संघ, बजरंगबली सेवा समिति, संयुक्त नवयुवक संघ, माता अंजनी धाम, श्री राम भक्त संघ, सर्वोदय संघ, महावीर सिंह, नवयुवक बजरंग क्लब, न्यू दुकानदार संघ, बालाजी क्लब, जय विश्वकर्मा क्लब, नवदीप सिंह, श्री श्री लक्ष्मी नारायण सेवा समिति, जय विजय सिंह निराला संघ, दुकानदार संघ और क्लब को दिया गया।

रसदा व जराद में हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, रातभर झूमे श्रोता

भक्ति आयोजनों से क्षेत्र में सुख-समृद्धि का आगमन होता है : अम्बा प्रसाद

फीता काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन करती विधायक अम्बा प्रसाद। ● द फोटोन न्यूज

ग्रामीणों को संबोधित करती मुख्य अतिथि अम्बा प्रसाद। ● द फोटोन न्यूज

भुरकुंडा (रामगढ़)।

श्रीश्री रामनवमी पूजा समिति के तत्वधान गुरूवार की रात्रि जराद गांव में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद ने विधिवत पूजा-अर्चना व फीता काटकर किया। मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें कलाकारों ने एक से बढ़कर एक गीत व नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। साथ ही रातभर सबों को झुमाए रखा। मौके पर विधायक अम्बा प्रसाद ने क्षेत्रवासियों को रामनवमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भक्ति आयोजनो से क्षेत्र में सुख-समृद्धि का आगमन होता है। साथ ही श्रद्धालुओं को भक्ति के सागर में डूबकी लगाने का अवसर मिलता है।

मौके पर विधायक प्रतिनिधि कृष्णा सिंह, मुखिया हेमा कुमारी, कांग्रेसी नेता योगेंद्र सिंह खरवार, प्रदीप महतो आदि मौजूद थें। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूजा कमेटी के संरक्षक दिनेश मुंडा, बैजनाथ महतो, सुरेंद्र करमाली, सूरजनाथ महतो, सीताराम महतो, भवानी सिंह, नरेश महतो, संयोजक धनेश्वर मुंडा, अध्यक्ष योगेंद्र सिंह, सचिव प्रदीप महतो, कोषाध्यक्ष अनिल सिंह, उपाध्यक्ष मुकेश महतो, उपसचिव शशि मुंडा, उप कोषाध्यक्ष मनोज प्रभाकर, केदार करमाली, दिनेश सिंह, देवनारायण गंझू आदि का विशेष योगदान रहा।

दूसरी तरफ बासल क्षेत्र के रसदा में भी गुरूवार की रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कलाकारों ने एक से बढ़कर एक गीत व नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। मौके पर विधायक अम्बा प्रसाद ने क्षेत्रवासियों को चैती दुर्गा, रामनवमी पर्व की बधाई देते हुए कहा कि भक्ति आयोजनों से क्षेत्र में हरियाली-खुशहाली का आगमन होता है। उन्होंने कहा कि मां दुर्गा सच्चे मन से प्रार्थना करने वाले भक्तों के सारे कष्ट हरकर सुखों की वर्षा करती है। मौके पर विधायक ने पूजा कमेटी का आर्थिक सहयोग करते हुए अंग वस्त्र देकर पर्व की बधाई दी।

मौके पर पतरातू प्रखंड के विधायक प्रतिनिधि कृष्णा सिंह, प्रदीप साहू, अरुण साहू मौजूद थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में कमेटी के अध्यक्ष मनोज साहू, सचिव मोहित कुमार, कोषाध्यक्ष सुनील साहू सहित राजकुमार, अनूप कुमार, शंकर कुमार, अमन कुमार, संजीव कुमार, विकास पाठक, शंकर साहू, मिथिलेश गोप, सोहन करमाली आदि सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

ब्रीफ न्यूज

चार वर्षीय रुखसार ने रमजान के दूसरे जुमे का रखा रोजा

रुमैसा रुखसार।

रजरप्पा : रमजान के पवित्र माह में बड़े तो रोजा रख ही रहे हैं, नन्हे रोजेदार भी किसी से कम नहीं हैं। चितरपुर बेलाल नगर के नन्हे रोजेदार चार वर्षीय रुमैसा रुखसार ने भी शुक्रवार को रमजान के दूसरे जुमे का रोजा रखी। इस संबंध में उन्होंने कहा कि रोजा रखने का मकसद है कि मेरा अल्लाह मुझसे राजी हो। रुमैसा आगे भी रमजान के रोजे रखने व इबादात करने की बात कही।

गोला में सिंदूर खेला के साथ दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन

गोला : गोला स्थित सार्वजनिक दुर्गा मंदिर में इस वर्ष चैती दुर्गा पूजा धूमधाम से सर्व धर्म सद्भाव के माहौल में संपन्न हुआ। दिनांक 31 मार्च 2023 को विजया दशमी पूजा के साथ दुर्गा प्रतिमा को उपस्थित जन समुदाय ने भाव-भीनी विदाई दी। स्थानीय महिलाओं ने एक दूसरे को सिंदूर लगाकर सिंदूर खेला का मनोरम आनंद उठाया तथा नम आखों से मां को विदाई दी। तत्पश्चात सायं बेला में गाजे बाजे के साथ मां दुर्गा की प्रतिमा का नगर भ्रमण कराते हुए स्थानीय कालीनाथ चौक स्थित तालाब में मां दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन किया।

रोटरी क्लब ने दिया 200 लीटर का वाटर प्यूरीफायर

भुरकुंडा (रामगढ़) : रोटरी क्लब भुरकुंडा अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाहन ईमानदारी पूर्वक करता आया है। इसी कड़ी में शुक्रवार को भी रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट 3250 ने रिभर साईड भुरकुंडा स्थित चिल्ड्रेन पैराडाइज पब्लिक स्कूल में 200 लीटर क्षमता का वाटर प्यूरीफायर दिया है। ताकि बच्चों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो सके। मौके पर रोटरी क्लब भुरकुंडा के अध्यक्ष रोटेरियन राम अवतार प्रसाद व रोटेरियन प्रवीण शर्मा ने कहा कि रोटरी का उद्देश्य ही समाजहित में कार्य करना है। उन्होंने कहा कि बच्चे देश के भविष्य होते हैं इनका सर्वांगीण विकास जरूरी है। बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर रहे इसी उद्देश्य से वाटर प्यूरीफायर स्कूल प्रबंधन को दिया गया है।

ओपी जिंदल की मनी 18वीं पुण्यतिथि, दी गई श्रद्धांजलि

भुरकुंडा (रामगढ़) : जेएसपी पतरातू कारखाना परिसर स्थित श्री हनुमान मंदिर में ओपी जिंदल समूह के संस्थापक ओपी जिंदल (बाबू जी) का शुक्रवार को 18वीं पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर बाबू जी ओपी जिंदल को पुष्पांजलि दी गई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्लांट हेड रमेश कुमार अजमेरिया, एचआर हेड सुभाष चंदर सहित कंपनी के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थें। सभी लोगों ने श्रद्धेय बाबू जी को पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। मौके प्लांट हेड रमेश कुमार अजमेरिया ने बाबू जी को याद करते हुए कहा कि उनका हमेशा हम सबों पर आशीर्वाद बना रहता है। आज उनका प्रेरणा और उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर ही कंपनी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। बाबू जी के पुण्यतिथि के अवसर पर जेएसपी फाउंडेशन द्वारा दिब्यांग बच्चों, असहाय बुजुर्गों को भोजन कराया गया।

जमशेदपुर में मिला कोरोना संक्रमित मरीज

पूर्वी सिंहभूम : जिले के मानगो इलाके का रहने वाला 30 वर्षीय युवक कोरोना संक्रमित पाया गया है। स्वास्थ्य विभाग ने कहा है कि पुराने संक्रमितों को ज्यादा संयमित रहने की जरूरत है। क्योंकि, ज्यादातर मामलों में पुराने मरीजों में वही पुराने लक्षण सामने आ रहे हैं, जिससे खतरा बढ़ रहा है। बढ़ते मामले को देखते हुए ज्यादा सतर्कता बरतने की अपील की गयी है। इस नये आंकड़े के साथ ही जिले में कोरोना संक्रमण के मरीजों की संख्या 12 पहुंच गयी है। इन सभी का इलाज टाटा मोटर्स अस्पताल में ही चल रहा है। जिले में इंफ्लुएंजा के नये वायरस एच3एन2 के पांच मरीजों की पुष्टि अब तक हो चुकी है। रामनवमी के बाद स्वास्थ्य विभाग अब जांच अभियान तेज कर रहा है। इंफ्लुएंजा से संक्रमित चारों मरीजों का ब्लड सैंपल लेकर जिला सर्विलांस विभाग ने जांच के लिए एमजीएम मेडिकल कॉलेज भेजा है।

सड़क हादसे में बाइक सवार की मौत

मेदिनीनगर : शहर थाना क्षेत्र के चियांकी में शुक्रवार सुबह सड़क हादसे में बाइक सवार की मौत हो गई। टीओपी टू के प्रभारी रुद्रानन्द सरस ने बताया कि चियांकी हवाई अड्डा रॉयल इन्फिल्ड बुलेट शोरूम के पास रोड एक्सीडेंट में एक व्यक्ति की मौत हुई है। ग्रामीणों के द्वारा कुछ देरी के लिए रोड जाम कर दिया गया था। ग्रामीणों और पीड़ित परिवार को समझा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए मेदिनीनगर अस्पताल में भेजा दिया गया है। थाना प्रभारी के अनुसार पुलिस युवक की पहचान करने में जुटी हुई है।

हजारीबाग में सरसों के तेल से लदे ट्रक में लगी आग

हजारीबाग : चौपारण थाना क्षेत्र में हथिया बाबा के दनुवा घाटी के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर शुक्रवार तड़के लगभग साढ़े तीन बजे सरसों के तेल से लदे एक ट्रक में आग लग गई। आग की वजह ट्रक में हुए शार्ट सर्किट को बताया जा रहा है। चौपारण थाना प्रभारी शंभूनंद ईश्वर ने बताया कि ट्रक पूरी तरह से जलकर राख हो गया। ट्रक चालक अख्तर को सुरक्षित निकाल लिया गया। यह ट्रक अलवर (राजस्थान) से कोलकाता जा रहा था। दमकल विभाग की मदद से आग बुझा दी गई है। एहतियातन राजमार्ग की एक लेन को बंद कर दिया गया।

पश्चिमी सिंहभूम में नक्सलियों ने डेटोनेटर और विस्फोटक लूटा

पश्चिमी सिंहभूम : नक्सलियों (भाकपा माओवादियों) ने पश्चिमी सिंहभूम जिले में एक खदान कंपनी के स्टोर रूम में धावा बोलकर बड़ी मात्रा में डेटोनेटर और विस्फोटक लूट लिया है। यह वारदात बडाज़ामदा ओपी अन्तर्गत परमबालजोड़ी गांव क्षेत्र के जंगल में गुरुवार देररात हुई है। पुलिस का कहना है कि नक्सलियों ने डीके घोष कंपनी के स्टोर रूम को निशाना बनाया है। इस स्टोर रूम की सुरक्षा की जिम्मेदारी प्राइवेट सुरक्षा गार्ड के हवाले थी। यह कंपनी लौह अयस्क की प्राइवेट खदानों को विस्फोटक पदार्थ की आपूर्ति करती है। इनका एक पेट्रोल पंप बड़ाजमदा में है। किरीबुरू के एसडीपीओ अजीत कुमार कुजूर ने घटना की पुष्टि की है।

स्कूटी से ड्यूटी जा रही महिला आरपीएफ जवान की सड़क दुर्घटना में मौत

पश्चिमी सिंहभूम : चक्रधरपुर-चाईबासा मुख्य मार्ग एनएच 75 पर उलीडीह पेट्रोल पंप के समीप शुक्रवार को भारी वाहन की चपेट में आने से महिला आरपीएफ जवान गोपा तियु (45) की मौत हो गई। वह स्कूटी से ड्यूटी जाने के दौरान दुर्घटना की शिकार हो गई। जानकारी के अनुसार पोटका निवासी रेलवे सुरक्षा बल की महिला जवान गोपा तियु आरपीएफ चाईबासा में तैनात थी। वह रोजाना की तरह शुक्रवार की सुबह भी स्कूटी से चाईबासा ड्यूटी करने के लिए जा रही थी। चक्रधरपुर-चाईबासा मुख्य मार्ग एनएच 75 ई उलीडीह के पास पेट्रोल पंप के समीप भारी वाहन ने स्कूटी को रौंद दिया, जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गई। चक्रधरपुर रेलवे अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद उसके परिजन एंबुलेंस से जमशेदपुर ले जा रहे थे लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई।

ऋषि मुनि आश्रम में रामायण पाठ का हुआ समापन

रांची : कांके सुकुरहुटू के साहू मोहल्ले में स्थित ऋषि मुनि आश्रम में वर्षों पुरानी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मंगलवार से पुनः रामायण पाठ का आयोजन प्रारंभ कर दिया गया था। जिसका गुरुवार को समापन किया गया। गुरुवार की रात को समस्त ग्रामवासियों द्वारा मंदिर प्रांगण में रामचरितमानस का पाठ कर विश्व कल्याण की कामना के गई। गौरतलब है कि बीते दो साल को होने वाले इस धार्मिक आयोजन पर कोरोना का ग्रहण लग गया था। इस दौरान प्रकाश साहू, रंजन साहू, मदन महतो, अजय महतो, पन्नालल महतो विश्वनाथ साहू,गौतम साहू, टुनटुन सहित बड़ी संख्या धर्मप्रेमी शामिल थे।

वैदिक रीति रिवाज से नव पत्रिका का विसर्जन

रांची : दुर्गा पूजा समिति पिठोरिया के तत्वधान में पिठोरिया में चैती दुर्गा पूजा धूमधाम से संपन्न हुआ। शुक्रवार की सुबह वैदिक रीति रिवाज से नव पत्रिका का विसर्जन किया गया। विजयदशमी को दुर्गा मंदिर परिसर में दसवीं मेला का आयोजन किया गया और संध्या बेला में भजन कीर्तन के साथ मां दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन बजार टांड़ स्थित तलाब में किया गया। दुर्गा पूजा के सफल आयोजन में अनिल कुमार केसरी, रामनारायण प्रसाद, चंद्रगुप्त महतो, कृष्णा महतो, अरूण केसरी, अजीत केसरी, विश्वनाथ बैठा, चंद्रिका प्रसाद, शिवदास वर्मा, सतीश केसरी, जगन्नाथ मिश्रा, विनोद रजक और राम लगन महली सहित अन्य की भूमिका सराहनीय रही। दुर्गा पूजा पुरोहित अखिलेश्वर पाठक और रामकृष्ण मिश्रा के द्वारा संपन्न कराया गया।

नीरजा सहाय डीएवी में मनाया गया कृतज्ञता दिवस

रांची : कांके स्थित नीरजा सहाय डी ए वी में संपूर्ण सृष्टि एवं प्राणी मात्र को धन्यवाद देने के लिए समर्पित आज का दिन कृतज्ञता दिवस के रूप में मनाया गया । कार्यक्रम की शुरूआत जीवन कौशल के विविध आयामों को सिखाते हुए एक सत्र के साथ हुई। खेल प्रशिक्षक मोहित मुकेश ने बचपन के कई खेलों जैसे गिल्ली- डंडा, पिट्टो इत्यादि को फिर से जीवित किया और शिक्षक आत्ममुग्ध होते हुए वापिस अपने बचपने की ओर रुख कर गये। योगा सत्र में स्वैच्छिक योग गुरु का रूप धरकर शिक्षकों ने कई आसन और सूर्य नमस्कार किया। विद्यालय परिवार के समस्त शिक्षकों एवं शिक्षाकेतर कर्मियों को भी धन्यवाद दिया गया। सारे जड़ चेतन को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्राचार्या किरण यादव ने इस दिवस को नये सत्र की शुरूआत एवं पुराने सत्र के अवसान के रूप में लेने को कहा तथा की गई गलतियों को ना दुहराने की अपील की एवं नये जोश एवं उमंग के साथ नीरजा सहाय डी ए वी को सर्वश्रेष्ठ बनाने की मुहिम को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। मौके पर शिक्षक एवं शिक्षाकेतर कर्मचारी उपस्थित रहे।

भक्ति जागरण के साथ मां दुर्गा की हुई विदाई

रांची : श्री चैती दुर्गा पूजा महासमिति भुतहा तालाब रांची में भक्ति जागरण मंडली के विक्की छाबड़ा तथा उनकी टीम के साथ जीवंत झांकी में जुगल की टीम उत्तर प्रदेश से आई, वीर बजरंगी ने मां की अगुवाई की, ढ़ोल तासा के साथ शूरू हुआ, शोभायात्रा में युवाओं और महिलाओं का उत्साह चरम सीमा पर था। शोभायात्रा के दौरान पूरा शहर जय माता दी के जयकारे से गूंज उठा। श्री चैती दुर्गा पूजा महासमिति,भुतहा तलाब के द्वारा शुक्रवार को दशमी को पूजा अर्चना के बाद खिचड़ी, हलवा और खीर का भोग लगाया गया और श्रद्धालूओं के बीच वितरण किया गया। शोभायात्रा पूजा पंडाल से महावीर चौक, गाँधी चौक, शहीद चौक, फिरायालाल होते लालपुर चौक, डंगरा टोली, चर्च रोड, मल्लाह टोली होते हुए लाइन टेंक रोड में मां को विदाई दी गयी, विसर्जन झांकी जिन क्षेत्रों से गुजरी, भक्तों की आंखे नम हुई, वे भी शोभा यात्रा में शामिल हो गए, सैंकड़ों की भीड़ हजारों में तब्दील हो गई। शोभायात्रा में मुख्य संरक्षक श्री किशोर साहू,रमेश सिंह, उदय साहू, राजकुमार गुप्ता अध्यक्ष रवि कुमार पिंकू, महामंत्री गोपाल पारीक, कार्यकारणी अध्यक्ष दीपू सिंह, कोषाध्यक्ष संजय सिंह लल्लू संयोजक कुमार राजा आदी यात्रा में शामिल थे।

निर्भीक एवं ईमानदारी पूर्वक करें निर्वाचन कार्य गौतम सपना मेश्राम

औरंगाबाद : नगर भवन, औरंगाबाद में बिहार विधान परिषद द्विवार्षिक निर्वाचन 2023 के मद्देनजर 02- गया स्नातक/शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र चुनाव के गस्ती सह मतपेटिका संग्रहण दल(पीसीसीपी), मतदान पदाधिकारियों तथा माइक्रो आब्जर्वर का संयुक्त संबोधन जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक, औरंगाबाद द्वारा किया गया। अपने संबोधन में पुलिस अधीक्षक स्वप्ना गौतम मेश्राम ने बताया की जिले के सभी प्रखंडों में शिक्षक तथा स्नातक निर्वाचन के लिए कुल 29 मतदान केन्द्र बनाए गए हैं। सभी केंद्रों पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था की गई है। किसी भी स्थिति में जिला नियंत्रण कक्ष में सूचना देने पर तत्काल और सुरक्षा बल भेजे जाएंगे। सभी लोग निर्भीक हो कर निर्वाचन कार्य को ईमानदारी पूर्वक निर्वहन करें। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी, सौरभ जोरवाल ने बताया कि जिले के सभी प्रखंड मुख्यालयों में शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के लिए 12 तथा स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के लिए 17 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। साथ ही 12 गस्ती सह मतपेटिका संग्रहण दल को लगाया गया है। सुरक्षा के पूरे प्रबंध किए गए हैं। विधि व्यवस्था हेतु 03 सेक्टर तथा 04 जोनल पदाधिकारी नियुक्त किए गए हैं। सभी पदाधिकारी अपने अपने दायित्वों का निर्वहन ईमानदारी पूर्वक करेंगे ताकि चुनाव कार्य निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो। इस अवसर पर अपर समाहर्ता आशीष कुमार सिन्हा, वरीय उप समाहर्ता डा फातेह फैयाज, उप विकास आयुक्त अभ्येंद्र मोहन सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी मोहम्मद गजाली, जिला परिवहन पदाधिकारी शैलेश कुमार दास, भूमि सुधार उप समाहर्ता दाउदनगर संजय कुमार, आईटी मैनेजर प्रदीप कुमार, मुख्य मास्टर प्रशिक्षक राजकुमार प्रसाद गुप्ता सहित प्रशिक्षण कोषांग के सैयद मोहम्मद दायम, कुंदन कुमार ठाकुर, कार्मिक प्रबंधन कोषांग के चंद्रशेखर सिंह, रियाज अहमद आदि मौजूद थे।

सम्राट चौधरी के नेतृत्व में बनेगी भाजपा की सरकार : सुमीत श्रीवास्तव

पटना। भारतीय जनता युवा मोर्चा के आई टी के प्रदेश सह-संयोजक सुमीत श्रीवास्तव ने प्रदेश भाजपा कार्यालय में भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी को नव दायित्व ग्रहण के बाद मिलकर बधाई दी। इस मुलाकात के बाद सुमीत ने कहा कि पार्टी का एक कार्यकर्ता होने के नाते इस नव दायित्व मिलने के बाद आदरणीय प्रदेश अध्यक्ष से मिलकर उन्हें नव दायित्व के लिए बधाई दिया।उन्होंने कहा की सम्राट चौधरी को अध्यक्ष बनाये जाने के बाद से कार्यकताओं में हर्ष है। हम सब अध्यक्ष जी के नेतृत्व में काम करेंगे। हमलोगों को यकीन की सम्राट चौधरी के नेतृत्व में बनेगी भाजपा की सरकार। 2025 में बिहार में भाजपा की सरकार बने इसके लिए हर कार्यकर्ता तन, मन और धन से काम करेगा।

धूमधाम से मनाई गई महा अष्टमी

चारामा (कांकेर)। चारामा के हिमांशु ब्यूटी पार्लर में चैत्र नवरात्रि पर महा अष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया । इस अवसर पर कन्या भोज कराकर माता का आशीर्वाद लिया गया । सभी भक्तजनों ने मातारानी का दर्शन कर दुर्गा अष्टमी की विधि विधान से पूजा की और माता का पवित्र प्रसाद ग्रहण किया। विविध झाँकियां भी प्रस्तुत की गईं। इस मौके पर हिमांशु ब्यूटी पार्लर की संचालिका चंद्रकांति नागे ने आदिशक्ति माता भवानी से सबके लिये आशीर्वाद की कामना की। कन्याभोज कराने के बाद बच्चों को दक्षिणा दिया गया। कार्यक्रम में प्रमिला साहू, लोकेश्वरी देवांगन, खोजमति सिन्हा और खिलेश्वरी यादव सहित नन्हें मुन्ने बच्चे उपस्थित थे।

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी ने चलाया सदस्यता अभियान

औरंगाबाद। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी का आज औरंगाबाद जिले के बारुण प्रखंड के ग्राम पिपरा मोड़ (गुलजार बीघा) बरौली में चौपाल किया गया। जिसमे सुहेलदेव भरतीय समाज पार्टी के बैनर तले लोगो को सदस्यता दिलाया गया। चौपाल के मुख्य अतिथि परशुराम राजभर (राजवंशी) प्रदेश सचिव यूपी सह प्रदेश कोऑर्डिनेटर सु.भा.स.पा. (बिहार), बिजय राजवंशी (जिला किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष) आजाद पासवान (प्रदेश अध्यक्ष दलित प्रकोष्ठ), रंजीत राजवंशी (प्रदेश महासचिव एवं पूर्व मुखिया), सुदामा राजबंशी (प्रदेश प्रचारक मंत्री) राधेश्याम राजवंशी (प्रखंड अध्यक्ष सु.भा. स.पा. बारुण) परशुराम राजवंशी जी ने चौपाल को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी 16 अप्रैल को गुलामी छोड़ो समाज जोड़ो विशाल जनसभा का आयोजन किया गया है स्थान दाउदनगर तरार खेल के मैदान में चलने को आवाहन किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय ओमप्रकाश राजभर जी (पूर्व कैबिनेट मंत्री वर्तमान विधायक गाजीपुर) होंगे। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के चौपाल के सदस्यता अंतर्गत विजय राजवंशी जी को जिला किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष बनाया गया राधेश्याम राजवंशी, जी को प्रखंड अध्यक्ष बारुण और रवि कुमार को जिला मीडिया प्रभारी मुख्य औरंगाबाद बनाया गया। साथ में आजाद पासवान प्रदेश अध्यक्ष दलित प्रकोष्ठ, रंजीत राजवंशी, जी प्रदेश महासचिव एवं वर्तमान मुखिया और सुदामा राजवंशी जी प्रदेश प्रचारक मंत्री विजय राजवंशी, मुंद्रिका राजवंशी, रविंद्र राजवंशी, सुनील राजबंशी, प्रकाश कुमार राजवंशी, बाल्मीकि राजवंशी, कन्हाई राजवंशी, वार्ड सदस्य, सुगिया देवी प्रखंड अध्यक्ष महिला मंच, कौशल राजवंशी, सोनू राजवंशी, सरयू राजवंशी, सजन राजवंशी, छठु राजवंशी, बिपिन राजवंशी, मोहन राजवंशी सभी लोग मौजूद थे।

रामनवमी जुलूसे में मुस्लिम समुदाय के लोग हुए शामिल

मुस्लिम समुदाय ने हाथों में थामा भगवा झंडा, निकाला सद्भावना मार्च मुस्लिम बाद में हैं सबसे पहले हैं हिंदुस्तानी, कहकर कर दी ये मिसाल कायम रामनवमी शोभा यात्रा को ले पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय ने शोभा यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को सहयोग करने के लिए तैयारी जोर शोर से जामा मस्जिद के पास हिंदू मुस्लिम एकता जिंदाबाद के नारे से गूंजा शहर औरंगाबाद : रामनवमी का खुमार हिंदू समुदाय के लोगों पर चढ़ा हुआ है। जुलूस निकाले जा रहे हैं। डीजे पर युवा जय श्री राम के नारे पर थिरक रहे हैं। इधर मुस्लिम समाज के लोगों ने एकता का संदेश दिया है।

समाजसेवा को ही तीर्थ मानते थे पण्डित रामव्यास पांडेय

चेनारी (रोहतास)। वर्तमान समय में जहा आदमी थोड़ी सी दान देकर अपना ढ़िढोरा पिटता है वही वर्षो पुर्व समाज के लिए अपनी पच्चीस कट्ठा निजी भूमि दानकर स्व. पण्डित.रामव्यास पांडेय अमर हो गए है।उनका जन्म स्थानी प्रखण्ड के पांडेय डीही गांव में दिनांक 01 मार्च 1882 को पहले के जमींदार परिवार में हुआ था।पिता का नाम स्व पतिनाथ पांडेय था।उस समय विद्यालय के अभाव के कारण वे शिक्षा ग्रहण नही कर सके।जमींदारी चले जाने के बाद उनका मुख्य पेशा कृषी के साथ-साथ पशुपालन था।आजादी के पूर्व ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण संस्थानों के अभाव के कारण बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पूर्णतः बाधित थी।अभिभावकगण अपने बच्चों को पढ़ाने में असमर्थ दिख रहे थे। इन परिस्थितियों को देखते हुए स्व.रामव्यास पांडेय ने डीही गांव में शिक्षा की रोशनी जलाते हुए अपना दस कट्ठा जमीन विद्यालय की स्थापना के लिए समर्पित कर दिए तथा दो गांवो को जोड़ने हेतु सड़क निर्माण के लिए मौजा कझाव में अपना पन्द्रह कट्ठा जमीन दान कर दिए।उनके द्वारा डाली गई शिक्षा की नींव से निकले बच्चें देश के अन्य राज्यों में भी डाक्टर,इंजीनियर, शिक्षक,पत्रकारिता एवं अभिनेता के तौर पर योगदान दें रहे है।चुकी विद्यालय के अभाव में वे स्वंय निरक्षर थे इसलिए गांव-जवार के बच्चे-बच्चीयों के शिक्षा के उद्देश्य से उन्होंने मौजा डीही थाना नम्बर 520, खाता 106, प्लाट 852 में अपना दस कट्ठा जमीन विद्यालय के निर्माण के लिए दान कर शिक्षा का अलख जगाया जो समाज सेवा में उनकी शुरूआत थी।आज उनकी दान दी हुई जमीन पर दो मंजिला विद्याल भवन एवं बुनियादी सुविधाओं के साथ उत्क्रमित मध्य विद्यालय संचालित हो रहा है जहा क्षेत्र के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे

है।वही ग्राम डीही एवं कझाव को जोड़ने वाली सड़क में पड़री सिवान के पास सरकारी जमीन नही होने पर उन्होंने मौजा कझांव थाना नम्बर 521 खाता 155 प्लॉट संख्या 24,25,34 एवं 36 में 15 कट्ठा अपनी निजी जमीन सड़क निर्माण के लिए दान दे दिया है

औरंगाबाद के युवा लेखक एवं आर्टिस्ट कौशल किशोर को किया गया सम्मानित

औरंगाबाद। दि ग्राम टुडे हिंदी दैनिक साहित्यिक परिशिष्ट में अनवरत लेखन सहभागिता के लिए दि ग्राम टुडे प्रकाशन अखबार की ओर से टीजीटी साहित्य सेवी सम्मान 2023 सम्मान पत्र देकर लेखक एवं आर्टिस्ट कौशल किशोर को सम्मानित किया गया एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। युवा लेखक और आर्टिस्ट कौशल किशोर ने बताया कि मैं यह सम्मान पत्र पाकर अत्यंत उत्सुक हूं क्योंकि पूरे देश और दुनिया के लोगों के बीच मुझे यह सम्मान पत्र प्राप्त हुआ एवं हमेशा से मेरा दिलचस्पी रही है कि कुछ लिख सकूं। मेरे द्वारा लिखी गई कहानी एवं कविता में यथार्थ होता है जो समाज को जागरूक करता है और समाज में जो हो रहा है उसी को अपने कलम से कॉपी पर उतारकर आप लोगों के बीच प्रस्तुत करता हूं ताकि आप सभी का आंख खुल सके और जागरूक हो सके। कौशल किशोर ने औरंगाबाद के अखबार संपादक से नर्म निवेदन भी किए हैं कि अपने अखबार में एक साहित्य परिशिष्ट रखा जाए जिससे औरंगाबाद में लिखने वाले व्यक्तियों का तादाद में इजाफा हो सके और अपने कलम की ताकत को दिखा सके। अंत में उन्होंने दि ग्राम टुडे हिंदी दैनिक के संपादक मंडल एवं उसके सभी लेखक बंधुओं को सम्मान पत्र पाने के लिए तहे दिल से धन्यवाद किया है ।

सभी के सहयोग से ही देवी मंदिर का देखभाल बेहतर होगा : एसडीएम

औरंगाबाद। देवी मंदिर परिसर मे नवरात्रि के आठवें दिन न्यास बोर्ड के अध्यक्ष सह अनुमंडल पदाधिकारी अनुपमा कुमारी ने देवी मंदिर पहुंचकर मां देवी की आरती में शामिल हुई। अध्यक्ष सह एसडीओ अनुपमा देवी को कमिटी सदस्य के साथ उपाध्यक्ष विगनी देवी सॉल एवं चुनरी देकर सम्मानित किया। अनुमंडल पदाधिकारी सभी उपस्थित लोगों को नवरात्रि की हार्दिक शुभ कामना दी और कहा की न्यास कमिटी के सदस्यों को सभी मिलकर सहयोग करे। आप सबों को सहयोग से ही देवी मंदिर का देखभाल बेहतर होगा। कहा की भक्ति भावना से कोई भी व्यक्ति सहयोग कर सकते है। उन्होंने कह की पुरुष के साथ महिलाए भी मंदिर कमिटी के सदस्यों को सहयोग कर सकते है। कहा की महिला सशक्तिकरण का उदाहरण देते कहा कहा की इस बार भी लड़कियों ने बेहतर अंक लाकर इंटर परीक्षा मे बेहतर अंक प्रदर्शित किया है। अंडर टेन मे ज्यादा लड़किया ने बाजी मारी कहा की वर्षो पूर्व इंटर परीक्षा मे ओबरा की सुगंधा ने भी बिहार मे प्रथम स्थान प्राप्त की थी। इस बार भी ओबरा मे कोमल कुमारी ने बिहार मे अंडर टेन सातवे स्थान पर लाकर अपनी परचम को लहराया है। इस लिए लड़को से ज्यादा लड़कियों में पढ़ने की रुचि जागरूक हुई है, जिसका जीता जागता मिशाल दिख रहा है। इतने संख्या मे महिलाओं मे देवी की दर्शन करने पहुंचे है जिसका भी उदाहरण दिख रहा है। सभी उपस्थित बहनों को भी शुभ कामना दी और आगे भी जोश खरोश के साथ मंजिल तय करने की कामना की। उन्होंने पिछले बार बिहार इंटर मे बिहार टॉपर सुगंधा के साथ इस बार इंटर मे अंडर टेन में आई छात्रा कोमल कुमारी को कमिटी सदस्यो के द्वारा मेमोन्टो देकर एसडीओ ने पुरुष्कृत किया। न्यास बोर्ड के सचिव कुमार राजेश ने भी न्यास कमिटी सदस्यो को भक्ति भावना से सहयोग करने की अपील की। कहा की न्यास बोर्ड सदस्य गरीबों की सेवा के प्रति सदैव तत्पर रहेगी। मौके पर कार्यक्रम का संचालन सचिव कुमार राजेश ने किया जब की श्रोता के रूप मे सरपंच अलका देवी उपस्थित

रही। कोषाध्यक्ष सुशील कुमार, अमित कुमार, पूर्व मुखिया शंभू प्रसाद, प्रतिष्ठित व्यवसाई विनय प्रसाद सुनील सौंडिक, विनय जयसवाल, मुखिया प्रतिनिधि गोबिंद अग्रवाल, सुबोध अग्रवाल, रामलाल सिंह, पूर्व मुखिया श्याम लाल सिंह, संतोष कुमार गुप्ता, पंडित संजय पाण्डेय, नंदलाल सोनी, रंजन कुमार समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

बिहार राज्य प्रारंभिक शिक्षक संघ ने दी बधाई

औरंगाबाद। बिहार लोक सेवा आयोग पटना के स्थापना के 75 वें वर्षगांठ के शुभ अवसर पर आयोग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षाओं के सफलतापूर्वक संचालन के उत्कृष्ट कार्य करने हेतु जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना श्री दयाशंकर बाबू को महामहिम राज्यपाल बिहार द्वारा सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। बिहार राज्य प्रारंभिक शिक्षक संघ औरंगाबाद के द्वारा हर्ष व्यक्त किया गया है। संघ के प्रदेश सचिव धनंजय सिंह,जिला अध्यक्ष रमेश सिंह, प्रधान सचिव विनय यादव,जिला उपाध्यक्ष छठू सिंह, संतोष सिंह,अमरेश कुमार रणविजय कुमार, जिला प्रवक्ता डॉ चंद्रदीप राम, जिला मीडिया प्रभारी अशोक पांडेय जिला कार्यालय सचिव सुबोध सुमन,प्रकाश लाल, शशि रजक,आलोक कुमार सहित अन्य संघीय पदाधिकारियों ने उत्कृष्ट कार्य हेतु महामहिम राज्यपाल द्वारा सम्मानित होने पर हर्ष व्यक्त किया है। संघ के नेताओं ने कहा कि जबसे जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना औरंगाबाद में श्री दयाशंकर बाबू का आगमन हुआ है तब से उन्होंने शिक्षा और शिक्षक हित में बहुत सारे अच्छे कार्य किए हैं। लगातार विद्यालय भ्रमण करके विद्यालयों में अच्छे शैक्षणिक माहौल बनाने सहित बहुत सारे अच्छे कार्य किए गए हैं इसी को लेकर उन्हें लगातार बधाई एवं शुभकामनाएं मिल रही है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

औरंगाबाद। शहर के सबसे पुरानी सामाजिक संस्था श्री सरस्वती सुशोभित समिति के संस्था के द्वारा शहर के काली कीर्तन संघ मैदान में भव्य भक्ति में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत औरंगाबाद शहर के अनुमंडल पदाधिकारी विजयंत कुमार, रेड क्रॉस के अध्यक्ष सतीश कुमार सिंह, नगर परिषद के अध्यक्ष उदय गुप्ता, रेड क्रॉस के कोषाध्यक्ष शिव गुप्ता, अजीत चंद्रा, पंकज वर्मा सभी लोगों ने संयुक्त रूप से प्रभु श्रीराम की महाआरती कर कार्यक्रम की शुरूआत की।। कार्यक्रम की प्रस्तुति राधा कृष्ण झांकी ग्रुप के द्वारा की गई सबसे पहले श्रोताओं को प्रभु श्रीराम एवं मां जानकी सीता की विवाह झांकी देखने को मिली शाहिद सुनील एवं हिमांशु के द्वारा भस्म शिव तांडव की प्रस्तुति पर सभी श्रोता झूमने पर विवश हो गए। पूरा वातावरण भक्ति में हो गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष नवीन सिन्हा एवं कार्यकारिणी अध्यक्ष रंजीत कुमार एवं उपाध्यक्ष अरुण सिन्हा ने की। कार्यक्रम का संचालन समिति के सचिव सचिन सिन्हा ने की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी विजयंत कुमार सभी को रामनवमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह त्यौहार सत्य का विजय का प्रतीक देने वाला त्यौहार है, सभी युवा वर्ग को प्रभु श्री राम के चरणों को अपने जीवन में उतारने की जरूरत है, होने वाले आगामी दिनांक 31 को शोभा यात्रा का सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सभी लोग अपेक्षा रखते का आप

सभी प्रशासनिक सहयोग करेंगे जिससे यह त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से शहर में संपन्न हो सके। नगर परिषद के अध्यक्ष उदय गुप्ता ने कहां की श्री सरस्वती सुशोभित समिति लगभग 40 वर्ष से ऊपर की सबसे पुरानी शहर की सामाजिक संस्था है। जो कि हमेशा सामाजिक कार्यों से लेकर धार्मिक कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती है। एक समय इस संस्था का हिस्सा रहते हुए मैं भी इस संस्था का अध्यक्ष रहा हूं यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। रामनवमी पूजा के अवसर पर संस्था के द्वारा कराया जा रहा कार्यक्रम काफी सराहनीय है। रेड क्रॉस के अध्यक्ष सतीश कुमार सिंह ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम के आयोजन से लोगों को अपने सनातन धर्म के बारे में जानने का अवसर मिलता है, श्री सरस्वती सुशोभित समिति हमेशा कुछ नया करने का प्रयास करता है, जिससे लोगों को धार्मिक भावनाओं से जोड़ने का प्रयास करते हैं जो कि काफी सराहनीय है। समिति के अध्यक्ष नवीन सिन्हा ने बताया कि समिति के द्वारा दो दिवसीय भव्य सांस्कृतिक व झाँकी कार्यक्रम का आयोजन कराया जा रहा है इस बार और इस बार का शोभायात्रा भी समिति के द्वारा भव्य तरीके से निकाला जाएगा शोभा यात्रा को लेकर समिति के कार्यकताओं में काफी उत्साह है। समिति के मीडिया प्रभारी आदित्य श्रीवास्तव ने कहा कि शोभायात्रा के तैयारी पूरी तरह से कार्यकताओं के द्वारा कर ली गई है, शोभायात्रा में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं के लिए पेयजल की भी सुविधा रखी गई है, इस बार की शोभायात्रा में काफी संख्या में श्रद्धालु शामिल होंगे। अयोध्या मंदिर के निर्माण को लेकर श्रद्धालुओं में अत्यधिक उत्साह है। मौके पर कार्यक्रम संयोजक सुदेश्वर पासवान, सह कार्यक्रम संयोजक अजय कुमार समिति के कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश कुमार, सह सचिव संजीव कुमार, रोशन मिश्रा, मनोज विश्वकर्मा, धनंजय कुमार, शिवनाथ कुमार, धर्मेंद्र , अनिकेत प्रभात, पंचम सोनी अन्य कई लोग मौजूद थे।

नौ दिवसीय श्रीराम महायज्ञ का पूणार्हुति

औरंगाबाद। ठाकुरबाड़ी शाहपुर औरंगाबाद में पूज्य महंत प्रशांत दास जी महाराज जी के द्वारा आयोजित नौ दिवसीय श्रीराम महायज्ञ का पूणार्हुति और वृहद भंडारा आज संपन हुआ। पूणार्हुति और भंडारा में श्री राम जानकी मंदिर परिसर में भगवान श्री राम जी का और महंत प्रशांत दास जी महाराज जी का आशीर्वाद लिए। औरंगाबाद के जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल व पुलिस अधीक्षक स्वपना मेश्राम ने कथा वाचक प्रकाश चंद्र जी महाराज, सुबोध दास जी महाराज, विजय मिश्रा जी महाराज वेदांति जी महाराज यज्ञ के संरक्षक अनिल सिंह, यज्ञ के अध्यक्ष शम्भू शर्मा, यज्ञ के स्वागत समिति के संयोजक दीपक कुमार सिंह, वार्ड प्रसाद राजेश कुमार लावारिस, यज्ञ के सदस्य विकाश बारूद, अशोक शर्मा, अक्षय पाण्डेय, दीपांकज सिंह, गोलू सिंह, अभिषेक कुमार, रोहित चौहान, गौतम चौहान, हर्ष माथुर हर्षित मिश्राहर्षित सिसोदिया निर्भय कुमार सनी शर्मा राहुल शर्मा शशि शेखर मनीष यादव विजय कुमार विक्की खत्री नीरज कुमार सिथार्थ सिसोदिया दीपक कुमार आदि लोग उपथित रहे।

कड़ाई पर चिंता

देश के सर्वोच्च न्यायालय की ओर से एक सलाह या राय आई है कि विधायकों और सांसदों को सजा सुनाने के मामले में निचली अदालतों को सावधान रहना चाहिए। दरअसल, सांसद और विधायक को दो साल या उससे अधिक की सजा होते ही सदस्यता से हाथ धोना पड़ता है। सर्वोच्च न्यायालय की यह राय लक्षद्वीप के सांसद मोहम्मद फैजल के मामले में सामने आई है। फैजल को कोर्ट से राहत मिली है और सदस्यता भी बहाल हुई है, पर क्या राहुल गांधी की भी बहाल होगी? आज यही सवाल ज्यादा चर्चा में है। न्यायमूर्ति जोसेफ और न्यायमूर्ति नागरत्ना की पीठ ने लक्षद्वीप के सांसद मोहम्मद फैजल व केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप की ओर से दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह बात कही है। हालांकि, ध्यान देने की बात है कि मोहम्मद फैजल को हत्या की कोशिश के मामले में 10 साल कैद की सजा सुनाई गई थी और उसके बाद ही उनकी सदस्यता गई थी, जबकि राहुल गांधी को तो मानहानि के मामले में दो साल की सजा सुनाए जाने के बाद ही सदस्यता से हाथ धोना पड़ा है और उन्हें अब सरकारी बंगले से भी निकलना पड़ रहा है। ध्यान रहे, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल के एम नटराज ने अदालत को बताया कि जन-प्रतिनिधित्व कानून की धारा 8(3) के मुताबिक, यदि किसी सांसद अथवा विधायक को दो या उससे ज्यादा साल की सजा होती है, तो उसकी सदस्यता स्वतः तत्काल चली जाती है। इसमें कोई शक नहीं कि फैजल अहमद या राहुल गांधी के साथ जो हुआ है, वह कानून के तहत ही हुआ है। यह भी ध्यान देने की बात है कि पहले जब आपराधिक किस्म के सांसदों पर कार्रवाई नहीं होती थी, तब अदालत की नाराजगी सामने आती थी, पर अब अदालत की कृपा से ही जब कड़ा कानून है और उसे लागू किया जा रहा है, तब नरमी की जरूरत बताई जा रही है। यह एक तरह से विडंबना है। कड़े कानून होने के फायदे भी हैं और नुकसान भी। यह भी सही है कि अगर कड़े कानून न हों, तो अपराधियों में भय नहीं होगा और किसी भी रसूखदार को सजा देने में परेशानी आएगी। लेकिन अब जो सर्वोच्च न्यायालय की सलाह है, उसे किस तरह से लागू किया जाएगा, यह एक बड़ा प्रश्न है। कहीं ऐसा न हो कि उदारता बरतने की नसीहत फिर दागियों का पोषण करने लग जाए! निचली अदालतों में कानून सम्मत अधिकतम सजा देने की परंपरा है और यह कतई गलत नहीं है। अनेक मामलों में निचली अदालतों ने नरमी बरती है और ऊपरी अदालतों में उनकी खूब आलोचना भी हुई है। अतः अदालतें इस बात पर पूरी तरह सहमत हैं कि रसूखदार और आम आदमी पर कार्रवाई के मामले में भेदभाव नहीं बरता जाना चाहिए। न्याय किसी गरीब या शोषित के लिए उदार हो सकता है, लेकिन किसी रसूखदार या अपराधी के लिए उसे कतई उदार नहीं होना चाहिए। कहीं न कहीं हमारा कानून उदार है, तभी तो दागी पृष्ठभूमि के सैकड़ों नेता विधानसभाओं और संसद में बैठे हैं। दागियों की संख्या किसी को भी विचलित कर देती है। अपराधियों के साथ सही ढंग से न्याय हो, तो उनमें से कोई भी चुनाव लड़ने तक की योग्यता नहीं जुटा सकेगा।

कौन हैं असली दोषी?

मई 2008 के जयपुर सीरियल ब्लास्ट मामले में राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला न केवल चौंकाता है बल्कि कई अहम सवाल भी खड़े करता है। उन भीषण धमाकों में 71 लोगों की मौत हुई थी और 200 लोग घायल हुए थे। इस मामले में गिरफ्तार किए गए पांच लोगों में से चार को विशेष अदालत ने दिसंबर 2019 में फांसी की सजा सुनाई थी, जबकि एक शख्स को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया था। अब हाईकोर्ट ने इन चारों को बरी कर दिया है। उसके मुताबिक, इनके खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य पेश नहीं किए गए। पुलिस को लापरवाही का दोषी पाते हुए हाईकोर्ट ने संबंधित अधिकारियों के खिलाफ विभागीय जांच शुरू करने के निर्देश भी दिए हैं। उसकी इस बात से सहमति जताई जा सकती है कि किसी भी मामले में साक्ष्यों की परख कड़ाई से की जानी चाहिए। लेकिन सवाल यह है कि साक्ष्यों की परख का पैमाना क्या हो? हाईकोर्ट ने कहा कि पुलिस ने लापरवाही बरती और ठोस अकाट्य सबूत नहीं जुटाए। लेकिन फांसी की सजा सुनाने वाली विशेष अदालत का कहना था कि ऐसे मामलों में चश्मदीद गवाहों का मिलना मुश्किल होता है। इसलिए परिस्थितियों और परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर फैसला दिया जा सकता है। तो सवाल तो उठता है कि ऐसे मामलों में परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर फैसला दिया जाना चाहिए या नहीं? दो भिन्न अदालतों के इतने अलग-अलग फैसले देख कर आम लोगों के मन में भी सवाल उठना लाजिमी है। यह कोई सामान्य बात तो नहीं कि जिन साक्ष्यों को एक अदालत ने फांसी जैसी सजा के लिए काफी माना, उन साक्ष्यों को दूसरी अदालत ने किसी भी सजा के लायक नहीं माना। उसने सबको बरी कर दिया। तो क्या पकड़े गए इन लोगों का सीरियल ब्लास्ट से कोई लेना-देना ही नहीं था? पुलिस ने निर्दोष लोगों को पकड़ लिया था? अगर ऐसा है तो फिर वे कौन लोग थे, जिन्होंने सीरियल ब्लास्ट को सचमुच अंजाम दिया था? क्या वे अब भी खुले घूम रहे हैं? हर हाल में पुलिस तंत्र और न्याय व्यवस्था को कड़े सवालों का सामना करना ही पड़ेगा। गौर करने की बात है कि यह कोई अकेला मामला नहीं है। बम धमाकों और आतंकी हमलों से जुड़े कई मामलों में पकड़े गए लोग ऊपरी अदालतों से छूटते रहे हैं। ऐसे में इस मामले को एक नजीर की तरह लेते हुए यह देखना जरूरी है कि आखिर गड़बड़ी कहां हो रही है?

स्वस्थ विश्व का आधार बना 'मिलेट्स'

विश्लेषण

✍ प्रो. संजय द्विवेदी

'हमारी जमीन और हमारी थाली में विविधता होनी चाहिए। अगर खेती इकहरी फसल वाली हो जाए, तो इसका बुरा असर हमारे और हमारी जमीन के स्वास्थ्य पर पड़ेगा। मोटे अनाज हमारी खेती और हमारे भोजन की विविधता बढ़ाते हैं। मोटे अनाजों के प्रति सजगता बढ़ाना इस आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लोग और संस्थाएं, दोनों ही बड़ा प्रभाव छोड़ सकते हैं। संस्थाओं के प्रयास से मोटे अनाजों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सकता है और समुचित नीतियां अपनाकर इनकी फसल को फायदेमंद बनाया जा सकता है। लोग भी स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए मोटे अनाजों को अपने आहार में शामिल करके इस पृथ्वी के अनुकूल विकल्प चुन सकते हैं। मुझे विश्वास है कि 2023 में मोटे अनाजों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष का यह आयोजन सुरक्षित, टिकाऊ और स्वस्थ भविष्य की दिशा में एक जन आंदोलन को जन्म देगा।' पिछले कुछ सालों से लोगों में अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरुकता बढ़ी है। खासकर कोरोना के बाद से यह चेतना चिंता में बदल गई है।

मिलेट्स यानी मोटा अनाज हमारे स्वास्थ्य, खेतों की मिट्टी, पर्यावरण और आर्थिक समृद्धि में कितना योगदान कर सकता है, इसे इटली के रोम में खाद्य एवं कृषि संगठन के मुख्यालय में मोटे अनाजों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष (आईवाईओएम) के शुभारंभ समारोह के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस संदेश से समझा जा सकता है-

'हमारी जमीन और हमारी थाली में विविधता होनी चाहिए। अगर खेती इकहरी फसल वाली हो जाए, तो इसका बुरा असर हमारे और हमारी जमीन के स्वास्थ्य पर पड़ेगा। मोटे अनाज हमारी खेती और हमारे भोजन की विविधता बढ़ाते हैं। मोटे अनाजों के प्रति सजगता बढ़ाना इस आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लोग और संस्थाएं, दोनों ही बड़ा प्रभाव छोड़ सकते हैं। संस्थाओं के प्रयास से मोटे अनाजों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सकता है और समुचित नीतियां अपनाकर इनकी फसल को फायदेमंद बनाया जा सकता है। लोग भी स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए मोटे अनाजों को अपने आहार में शामिल करके इस पृथ्वी के अनुकूल विकल्प चुन सकते हैं। मुझे विश्वास है कि 2023 में मोटे अनाजों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष का यह आयोजन सुरक्षित, टिकाऊ और स्वस्थ भविष्य की दिशा में एक जन आंदोलन को जन्म देगा।' पिछले कुछ सालों से लोगों में अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरुकता बढ़ी है। खासकर कोरोना के बाद से यह चेतना चिंता में बदल गई है। लोगों ने महसूस किया है कि अगर खानपान और जीवनशैली में बदलाव नहीं लाया गया, तो इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। यही वजह है कि ज्वार, रागी, कोदो, सामा, बाजरा, सांवा, कुट्टू, जैसे अनेक मोटे अनाज की पूरी दुनिया में मांग बढ़ी है। लेकिन भारत ने तो इस चेतना की अलख काफी पहले से ही जगानी शुरू कर दी है। 2014 में जब केंद्र में भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार सत्ता में आई, तभी से इस दिशा में प्रयास किये जाने लगे थे। इन्हीं प्रयासों का नतीजा था वर्ष 2018 को सरकार द्वारा ह्यराष्ट्रीय मिलेट वर्षह्ल घोषित किया गया। मिलेट के वैश्विक उत्पादन में 18 प्रतिशत भागीदारी के साथ भारत आज विश्व का सबसे बड़ा मिलेट उत्पादक देश बन चुका है और प्रति हेक्टेयर उत्पादकता की दृष्टि से भी दुनिया के मिलेट उत्पादक देशों में दूसरे स्थान पर आ चुका है। वर्तमान में विश्व के लगभग 130 देशों में मिलेट उगाए जा रहे हैं और एशिया व अफ्रीका महाद्वीप में रहने वाले लगभग साठ करोड़ लोगों के नियमित भोजन का हिस्सा बने हुए हैं। उत्पादन और उत्पादकता के 2016 से 2021 के आंकड़ों पर नजर डालें, तो हम पायेंगे कि विश्व के पांच सबसे बड़े पोषक अनाज (मिलेट) उत्पादक देशों में भारत के अलावा नाइजर, सूडान, नाइजीरिया और माली जैसे देश शामिल हैं। भारत में 142.93 लाख हेक्टेयर जमीन पर इनकी खेती होती है और पांच साल में औसतन 156.12 लाख टन मिलेट का उत्पादन हुआ, जबकि दूसरे स्थान पर रहे नाइजर में 107.16 हेक्टेयर भूमि पर सिर्फ 56.39 लाख टन उत्पादन रहा। पूरे विश्व में मिलेट उत्पादन का औसत 890.92 लाख टन है, जिसमें 156.12 लाख टन से ज्यादा भारत में उपजा है। उत्पादकता (किलोग्राम प्रति हेक्टेयर) की दृष्टि से सिर्फ नाइजीरिया ही भारत से आगे है, वह भी बहुत कम। नाइजीरिया में यह उत्पादकता 1103 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है, और भारत में 1092 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर। वैश्विक उत्पादकता 1211 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के यह काफी करीब है। इस सबका श्रेय जाता है प्रधानमंत्री मोदी और उनके नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की दूरदर्शी नीतियों और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति को। सच तो यह है कि मोटे अनाज हजारों साल से हमारे पारंपरिक भोजन का हिस्सा रहे हैं। खान-पान की हमारी इस समृद्ध विरासत की जड़ें, सिंधु घाटी की सभ्यता तक जाती हैं। आदिकाल के ह्ययजुर्वेदह्ल, ह्यसुश्रुत संहिताह्ल, कालिदास के ह्यअभिज्ञान शाकुंतलमह्ल, कौटिल्य के ह्यअर्थशास्त्रह्य से ह्यआईना-ए-अकबरीह्ल तक अनेक महान ग्रंथों में मोटे अनाजों के बारे में वर्णन है। इससे पता चलता है कि हमारे खानपान में इनकी उपस्थिति कितना पहले से है। यह उपस्थिति अकारण नहीं है। मिलेट्स हर दृष्टि से सभी के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

मिलेट मे प्रोटीन, फाइबर और कैल्शियम, जिंक, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, कॉपर, आयरन, जैसे खनिजों और काबोर्हाइड्रेट, एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन आदि काफी उच्च मात्रा में पाये जाते हैं। हम जो भी खाते हैं, उसका अधिकतर हिस्सा हमारे पेट में जाकर ग्लूकोज में परिवर्तित होकर हमारे रक्त में मिल जाता है, जो कि शुगर का एक मृदु रूप होता है। गेहूं व चावल जैसे आधुनिक दौर के लोकप्रिय अनाजों की तुलना में मिलेट इसलिए बेहतर हैं, क्योंकि इनके ग्लूकोज में बदलने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत काफी धीमी होती है। इसके अलावा ये ग्लूटोन मुक्त होने के कारण कई प्रकार के उदर रोगों से भी बचाते हैं। इन सब कारणों से इस वजह से यह स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक माने जाते हैं। पोषक तत्वों और खनिजों की मौजूदगी के कारण मिलेट फसलों के पुआल को भी पशुओं के चारे के रूप में काफी पोषक माना जाता है । कुपोषण से निपटने के मामले में भी मिलेट उत्कृष्ट विकल्प साबित हुए हैं। भारत में कुछ राज्यों में स्कूलों में मध्याह्न भोजन में मिलेट से बने आहार को शामिल किया गया, तो इसके उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले और बच्चों के बीएमआई (बॉडी मास इंडेक्स) में आश्चर्यजनक सुधार देखने को मिला। मिलेट पर्यावरण की दृष्टि से भी बेहद उपयोगी हैं। ये विभिन्न प्रकार के तापमानों वाले नम और शुष्क सभी क्षेत्रों में उगाये जा सकते हैं। उन्हें पनपने के लिए पानी और वर्षा की जरूरत कम होती है। ये महज 300-400 मिमी पानी में भी भी उग सकते हैं। ये लगभग हर प्रकार की मिट्टी में अंकुरित हो सकते हैं। इनमें कीड़े लगने की आशंका भी नहीं के बराबर होती है। इसलिए इनमें केमिकल फर्टिलाइजरों और कीटनाशकों का इस्तेमाल करने की की बहुत कम जरूरत होती है। मिलेट का फसल चक्र भी बारीक अनाजों की तुलना में बेहतर होता है, क्योंकि अधिकतर मिलेट को परिपक्व होने में 60-90 दिनों की आवश्यकता होती है, जबकि बारीक अनाज के लिए यह अवधि 100 से 140 दिन हो सकती है। मोटे अनाजों की खेती में आने वाला खर्च भी कम होता है। इन सब वजह से मिलेट की खेती, छोटे किसानों के लिए काफी फायदेमंद हैं। क्लाइमेट चेंज की चुनौती से जूझती दुनिया के लिए भी मिलेट किसी वरदान से कम नहीं हैं, क्योंकि इनमें कार्बन उत्सर्जन बहुत कम होता है। साथ ही जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व पर खाद्यान्नों की कमी का जो संकट मंडरा रहा है, अपनी सहज और सरल उपजता की प्रवृत्ति के कारण मिलेट्स उससे निपटने में भी हमारी काफी सहायता कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में मिलेट काफी बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। इसमें काफी बड़ा योगदान भारत का भी है। मिलेट के महत्व को फिर से स्थापित करने में जो सफलता हासिल की है, उसने पूरी दुनिया को मोटे अनाजों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। यह सफलता हमें अनायास ही नहीं मिली है। इसके लिए हमने अथक प्रयास किए हैं। जैसे कि वर्ष 2018-19 में हमने मिलेट को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) से जोड़ा और पोषक इसके उपमिशन के रूप में देश के 212 जिलों में लागू किया। इनमें पोषक अनाज में सोरघम (ज्वार), पर्ल मिलेट (बाजरा), फिंगर मिलेट (रागी/मंडुआ) और कुटकी, कोदो मिलेट(कोदो), बार्नयार्ड मिलेट (सावा/झंगोरा), फॉक्सटेल मिलेट (कंगनी/काकुन), प्रोसो मिलेट (चीना) जैसे छोटे मिलेट शामिल हैं। इनके अलावा कुट्टू और चौलाई को भी पोषक अनाज के रूप में अधिसूचित किया गया है।

हिसार में बाजरे के लिए सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद में ज्वार के लिए भारतीय मिलेट अनुसंधान संस्थान और बेंगलुरु में छोटे मिलेट के लिए कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय जैसे तीन राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्रों (सीओई) की स्थापना भी की गई है। एनएफएसएम के तहत मिलेट को प्रोत्साहन देने के क्रम में देश के 13 राज्यों में पोषक अनाज के ब्रीडर बीज उत्पादन को बढ़ाने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/आईसीएआर संस्थानों में 18 केंद्र स्थापित किए गए।

(लेखक, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक हैं।)

गांधी परिवार, फितरत में अहंकार

राहुल गांधी के राजनीतिक जीवन में सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए बेबुनियाद बातें करना, गलत शब्दों के प्रयोग, अनावश्यक लांछन लगाने की प्रवृत्ति नई बात नहीं है। ऐसे अनेक प्रसंग हैं। इससे वह देश में हास्यापद हो गए हैं। लोग चटखारे लेते हैं। इससे बड़ा नुकसान उनकी पार्टी को तो हुआ ही है, साथ ही गांधी परिवार चरित्र चर्चा के दायरे में आ गया है। सूरत के विधायक पूर्णेश मोदी का राहुल के ऐसे ही बयान पर आपराधिक मानहानि का मुकदमा सुर्खियों में हैं। इस मुकदमे के अदालती फैसले से राहुल ने संसद की सदस्यता से अयोग्य घोषित हो गए हैं। यह कहने में संकोच नहीं है कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर राहुल का यही अतिरेक ही इस गति का कारण बना। 2019 में कर्नाटक की एक सभा में राहुल ने प्रधानमंत्री की पिछड़ी जाति का अपमान करते हुए कहा था कि देश के सब मोदी चोर क्यों होते हैं। यही वो बयान है जिस पर अदालत ने राहुल को दो साल की सजा सुनाई है। माना की सोने की चम्मच मुंह में लेकर राहुल राजप्रसाद में जन्मे हैं। उनकी पीढ़ियों ने देश में लंबे समय तक राज किया है। वो भी लोकसभा के सदस्य रहे हैं। कांग्रेस की कमान संभाल चुके हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं वह गरीब परिवार में जन्मे और राजनीति के फलक पर चमक रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अपमान करेंगे। दूरदर्शी मोदी तीन दशक से पूरे विश्व को प्रभावित कर रहे हैं। आज देश-दुनिया में उनकी लोकप्रियता भारत के हर नागरिक का सिर गर्व से ऊंचा कर रही है। सत्ता में रहने का अधिकार केवल एक ही परिवार को नहीं होता। इसे कांग्रेस और राहुल को समझना होगा।

सत्ता वियोग के दुख से हताश राहुल गांधी अगर कोपभवन से नहीं निकले तो वह दिन दूर नहीं जब देश की जनता उन्हें और उनकी पार्टी को पूरी तरह खारिज कर देगी। राहुल को अहंकार त्यागना होगा। वैसे गांधी परिवार की तीन पीढ़ियों की मानसिकता का इतिहास कौन नहीं जानता। इन लोगों ने अपने गलत बयानों के लिए कभी माफी नहीं मानी। यह ऐतिहासिक साक्ष्य है कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस जब बहुमत से कांग्रेस के अध्यक्ष बने तब राहुल के पड़नाना नेहरू परेशान थे। उनके द्वेषपूर्ण रवैये की वजह से ही नेताजी को भारत से बाहर जाना पड़ा। स्वतंत्र भारत में उनकी मृत्यु का रहस्य कांग्रेस राज में फाइलों में दफन रहा। नेहरू ने कभी इस ऐतिहासिक गलती के लिए माफी नहीं मानी।

सावरकर और संघ के प्रति दुर्भावना गांधी परिवार की खानदानी परिपाटी है। यही कारण है कि नेहरू ने गांधी जी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर पर आरोप जड़े । देशभक्त स्वयंसेवकों और सावरकर को जेल में बंद कर दिया। संघ पर प्रतिबंध लगा दिए गए। शर्मनाक यह है कि अदालत ने जब सबको बेदाग घोषित कर दिया तब भी नेहरू ने माफी नहीं मांगी । पाकिस्तान के साथ पहले युद्ध में नेहरू के कार्यकाल के समय कश्मीर का कुछ हिस्सा हमसे छीन लिया गया। यह भू-भाग आज तक वापस नहीं आया। इसका जिक्र कभी भी गांधी परिवार नहीं करता। इस ऐतिहासिक गलती पर माफी मांगना तो दूर की बात है। 1962 के युद्ध में नेहरू के चाइना प्रेम के कारण हिंदी चीनी भाई-भाई के नारों के बावजूद अपना कुछ भू-भाग चाइना के पास चला गया। सीमा क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत न होने से अपने सैनिकों को युद्ध में बड़े पैमाने पर शहादत देनी पड़ी। हार स्वीकारनी पड़ी। तब भी नेहरू ने देश से माफी नहीं मांगी।

राहुल की दादी इंदिरा गांधी ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले का अपमान करते हुए अपनी कुर्सी बचाने के लिए इमरजेंसी लगा दी। राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जेलों में ठूंस दिया। जबरदस्ती लाखों लोगों की नसबंदी कर दी गई। लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी और देशभक्त अटल बिहारी वाजपेयी तक को जेल भिजवा दिया। ढाई साल बाद हुए आम चुनाव में देश ने कांग्रेस के साथ इंदिरा गांधी का सत्ता से उखाड़ फेंका। देश ही नहीं दुनिया जानती है कि इमरजेंसी के लिए इंदिरा गांधी और राहुल के चाचा संजय गांधी ने कभी माफी नहीं मांगी। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या और सिखों के नरसंहार पर राहुल के पिता राजीव गांधी ने सार्वजनिक रूप से बयान दिया था कि बड़ा वृक्ष गिरने के बाद जमीन तो हिलती ही है। यह ऐसी टिप्पणी है जिसे कभी भी सिख समुदाय भूल नहीं सकता। अफसोस यह है कि राजीव गांधी ने कभी भी इस बयान के लिए न तो पाश्चाताप किया, न ही माफी मांगी।

इससे साफ है कि गांधी परिवार के नस-नस में अहंकारी प्रवृत्ति है। यह लोग भारत को अपनी जागीर समझते हैं। यह परिवार संगठन में खुद को सबसे ऊंचा समझता है। अगर किसी ने विद्रोह करने की कोशिश की तो उसका अपमान करने में देर नहीं लगाते। यह गांधी परिवार अध्यादेश तक को फाड़ने से पीछे नहीं हटता। निजलिंगप्पा, नीलम संजीव रेड्डी, सीताराम केसरी, मोरारजी देसाई जैसे तमाम नेता हैं जिन्होंने गांधी परिवार के अपमान को सहते हुए खून का घूंट गटका है।

राहुल का यह व्यवहार केवल देश में, संसद में या सार्वजनिक सभाओं तक सीमित नहीं है। वह विदेश में भी देश की बदनामी करने में अपनी शान समझते हैं। इसके लिए हल्ला मचे तब भी देश से माफी नहीं मांगते। अब अगर अदालत ने सजा सुनाई है तो इसमें सरकार का क्या कुसूर। जैसी करनी वैसी भरनी है। राहुल को लोकतंत्र और न्यायपालिका का सम्मान करते हुए इस मसले पर राजनीतिक रोटियां सेकने का कार्यक्रम बंद करना चाहिए।लोकतंत्र में ह्यहम करें सो कायदाह्ल नहीं चलता है। संयोग या दुर्योग से माफी मांगने की परिपाटी आपके खानदान में नहीं है, तो आपसे क्या अपेक्षा की जाए?

सोशल मीडिया से...

सच के हक में...

बोडोफा उपेंद्रनाथ ब्रह्मा का जीवन लोगों के कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी जयंती पर उन्हें याद करते हुए। भारत सरकार और असम सरकार उनके सपनों को साकार करने के लिए कई प्रयास कर रही हैं और अद्भुत बोडो लोगों के सशक्तिकरण के लिए काम कर रही हैं।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

दाहू यादव को नहीं पकड़ने के पीछे कौन सी मजबूरी है मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी? विरोधियों पर झूठे मुकदमों का अंबार लगाने और फटाफट पकड़ने वाली आपकी पुलिस का दाहू को पकड़ने में हांथपॉव काहे फूल रहा है? साहिबगंज के एसपी को अगर आपका आदेश मिल जाय और कार्रवाई की चेतावनी दी जाय तो मेरा दावा है कि वहाँ का एसपी दो घंटे में दाहू को गिरफ़्तार करवा लेगा। लेकिन आप ऐसा कर पायेंगे? इसमें संदेह इसलिये है कि आपके पाले हुए दाहू सरीखे लोगों को पुलिस का खुला संरक्षण प्राप्त है?

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

कर्नाटक का संग्राम

कर्नाटक में चुनावी बिगुल बज गया है। राजनीति की बिसातें बिछ चुकी हैं। चुनाव की घोषणा से ठीक पहले प्रधानमंत्री लंबी-चौड़ी घोषणाएं कर चुके हैं। उनका भारी-भरकम रोड शो भी सुर्खियों में रहा है। इस 224 सदस्यों वाली विधानसभा के परिणाम जल्दी पाने की आकांक्षा नजर आती है। एक ही दिन दस मई को पूरे कर्नाटक में चुनाव होंगे और महज तीन दिन बाद विधानसभा चुनाव का परिणाम देश के सामने होगा। दक्षिण भारत में भाजपा के इस अकेले दुर्ग में भले ही उसकी पार्टी की सरकार है, लेकिन इसे हासिल करने के तमाम दांव-पेच सबने देखे हैं। लेकिन कर्नाटक चुनाव के भाजपा व अन्य राजनीतिक दलों के लिये खास मायने हैं। एक तो ये 2024 के महासमर से पहले होने वाले चुनाव होंगे, दूसरे चुनाव के बाद राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में इस साल होने वाले चुनाव के लिये सभी दल अपनी-अपनी सुविधा से कर्नाटक चुनाव परिणामों की व्याख्या भी करेंगे। सत्तारूढ़ भाजपा की प्रतिष्ठा तो इस चुनाव में दांव पर लगी ही है, कांग्रेस की प्रतिष्ठा का भी यहां बड़ा सवाल है। वजह यह है कि गांधी परिवार से अलग बाहर से चुने गये राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का भी यह गृह राज्य है। अतः चुनाव परिणामों से उनके नेतृत्व की भी प्रतिष्ठा तय की जायेगी। बहरहाल, भाजपा को सत्ता के खिलाफ होने वाले प्रतिरोध का सामना तो करना ही पड़ेगा। पार्टी ने कुछ समय पहले राज्य में नेतृत्व परिवर्तन करके यह संदेश देने का प्रयास किया कि राज्य में साफ-सुथरा शासन दिया जा रहा है। इसके बावजूद पार्टी ने साम-दाम-दंड-भेद के जरिये फिर से सत्ता में लौटने के लिये पूरा जोर लगाया है। राज्य की राजनीति में दमदार दखल रखने वाले दो बड़े व प्रभावशाली जातीय समूह लिंगायतों व वोक्कालिंगा को साधने के लिये एड़ी-चोटी का जोर भी लगाया है। इतना ही नहीं, कई विवादों के चलते जिन येदियुरप्पा की मुख्यमंत्री पद से विदाई की गई थी, उन्हें फिर सम्मान देकर उनका कद भी बढ़ाया गया है। वे विगत में भी पार्टी के जातिगत समीकरण साधने में मददगार रहे हैं। इस बीच उठने वाले धार्मिक-सांप्रदायिक विवादों के अपने रंग नजर आये हैं। तुष्टीकरण की नीति के बीच अल्पसंख्यकों को मिलने वाले चार फीसदी आरक्षण को भी खत्म किया गया है, जिसको लेकर राज्य में कई आंदोलन भी हुए हैं। बहरहाल, भाजपा प्रधानमंत्री व केंद्रीय मंत्रियों के जरिये तमाम घोषणाओं से पार्टी के पक्ष में माहौल बनाने में जुटी है। अब देखना होगा कि 150 सीटें जीतने का दावा करने वाली भाजपा चुनावी समर में कितनी कामयाबी हासिल कर पाती है। वहीं विपक्ष भाजपा सरकार पर भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे पर हमलावर है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि भारत जोड़ो पदयात्रा के दौरान राजनीतिक निहितार्थों के चलते राहुल गांधी ने कर्नाटक को खासी तरजीह दी है, जिसका उन्हें सकारात्मक प्रतिसाद भी मिला। परंपरागत रूप से कर्नाटक कांग्रेस का गढ़ रहा है। भाजपा के तमाम विस्तार के बावजूद यहां कांग्रेस का मत प्रतिशत बरकरार रहा है। अब देखना होगा कि राहुल गांधी को मानहानि मामले में सजा, संसदीय सदस्यता खत्म करने तथा सरकारी आवास वापस लेने के मुद्दे को किस हद तक कांग्रेस भुनाने में सफल रहती है। वहीं कांग्रेस ने राज्य में मुस्लिम आरक्षण बहाली का वादा भी अल्पसंख्यक मतों के ध्रुवीकरण के लिये किया है। निस्संदेह, राज्य की सत्ता में वापसी के लिये भाजपा की राह आसान नहीं है। राज्य में जेडीएस का भी खासा दखल रहा है। जो करीब पिछले दो दशक से राज्य में आने वाले खंडित जनादेश के वक्त निर्णायक भूमिका निभाता रहा है।

मुझे कुछ कहना है...

वित्तीय वर्ष के अंतिम दिन रांची नगर निगम की ओर से वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 2,801 करोड़ रुपये का बजट पास किया गया। वित्तीय वर्ष 2022-23 में 2,757 करोड़ रुपये का बजट पास किया गया था। कहा गया है कि इस वर्ष शहर में पानी और सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। गर्मी आते ही जिस-जिस इलाके में पानी की समस्या होती है उस इलाके में बोरिंग करायी जाएगी। इसके अलावा डोर टू डोर कचरा उठाने और पूरे शहर में साफ-सफाई पर ध्यान दिया जाएगा। हर इलाके में समय से कचरा उठाया जाएगा और साफ सफाई की जाएगी। महापौर आशा लकड़ा का कहना है कि मोहल्लों में इलेक्ट्रिक पोलों पर एलईडी लैंप लगाए जाएंगे। नाली, पथ, शिक्षा व्यवस्था, जलापूर्ति, सामुदायिक भवन व सार्वजनिक शौचालय का निर्माण होगा। वायु की व्यापकता को उच्च स्तरीय के लिए ठोस अपशिष्ट के प्रबंधन व शहरी जलापूर्ति के लिए विभिन्न योजनाएं ली जाएंगी। साथ ही फॉगिंग मशीन की खरीदारी की जाएगी। इस वित्तीय वर्ष में सिटी डेवलपमेंट प्लान के लिए दो करोड़ रुपये प्रस्तावित किया गया है। आउटसोर्सिंग के माध्यम से सेवा प्राप्त कर व कर्मियों की कमी को पूरा करने की बात कही गई है। राज्य की राजधानी होने से शहर काफी विस्तृत एवं बड़ा हो रहा है। शहर को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। पिछला अनुभव बताता है कि नगर निगम के बजट में हर वर्ष स्वास्थ्य, शिक्षा और फायर ब्रिगेड पर करोड़ों रुपये का बजट पास किया जाता है लेकिन काम कुछ नहीं होता है। इस बजट में योजनाएं और दावे तो बहुत किए गए हैं लेकिन नगर निगम क्षेत्र में रहनेवाले आम लोगों को इसका कितना लाभ मिल पाएगए यह आनेवाला समय बताएगा। पिछले दो वर्ष का आकलन किया जाए तो शहर में नागरिक सुविधाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती है।

दयानंद मिश्रा, अध्यक्ष क्षेत्रीय जनविकास परिषद।

दैनिक द फोटोन न्यूज, के लिए प्रकाशित एवं स्वामित्व मां मीडिया वेंचर रोस्पा टावर, चौथा तल्ला, मेन रोड, रांची, शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, काठीटांड, नियर टेंडर बगीचा, पोस्ट + थाना - रातू, जिला - रांची, झारखंड, पिन - 835222 से मुद्रित।
प्रधान संपादक - **फहीम अख्तर*** (M) +919431311669, RNI NO. आवेदित (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार), website : www.thephotonnews.com, E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

आईपीएल : पंजाब किंग्स और केकेआर में होगी कड़ी टक्कर

मोहाली (एजेंसी)। आईपीएल के 16 वें सत्र में शनिवार को पहला मुकाबला शिखर धवन की कप्तानी वाली पंजाब किंग्स और नितीश राणा की कप्तानी वाली कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के बीच दोपहर में खेला जाएगा। इन दोनो ही टीमें की हालत एक सी है और से खिलाड़ियों की खराब फिटनेस के साथ ही कुछ विदेशी खिलाड़ियों के उपलब्ध नहीं होन से मुश्किल में हैं। इसके बाद भी इन दोनो टीमों का लक्ष्य जीत से शुरुआत कर मनोबल बढ़ाना रहेगा। पंजाब किंग्स के कप्तान धवन पिछले काफी समय से टीम इंडिया से बाहर है और उनकी नजरें आईपीएल में बेहतर प्रदर्शन कर अपने को साबित करन रहेगा। वहीं श्रेयर अय्यर के चोटिल होने के कारण केकेआर के कप्तान बने राणा की नजरें आईपीएल में बेहतर प्रदर्शनकर राष्ट्रीय टीम में जगह बनाना रहेगा। आईपीएल में इन दोनों टीमों के पास हमेशा अच्छे खिलाड़ी रहे है पर मैदान पर उनका प्रदर्शन उतना प्रभावशाली नहीं रहा है। इसलिए लिए टीम खिताबी दौड़ में पिछड़ जाती है।

पंजाब किंग्स ने अब तक एक बार भी खिताब नहीं जीता है जबकि केकेआर की टीम ने गौतम गंभीर की कप्तानी में दो बार ट्रॉफी अपने नाम की थी। पिछले सत्र में पंजाब छठे और केकेआर सातवें पायदान पर थी। इस सत्र में दोनों टीमों की कमान नये कप्तानों के पास है।

केकेआर के मुकाबले पंजाब की टीम थोड़ी अधिक अच्छी नजर आ रही है उसे घरेलू मैदान का भी लाभ मिलेगा। टीम को हालांकि इंग्लैंड के स्टार खिलाड़ी जॉनी बेयरस्टो की कमी खलेगी। बेयरस्टो चोटिल होने के कारण पूरे सत्र से ही बाहर हो गये है। फ्रेंचाइजी ने बेयरस्टो की जगह ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी मैथ्यू शॉर्ट को टीम में शामिल किया है। शॉर्ट के धवन के साथ पारी शुरु करने की संभावना है। वहीं तेज गेंदबाज

लियाम लिविंगस्टोन और कागिसो रबादा भी शुरुआती कुछ मुकाबलों में नहीं खेल पाएंगे जिससे पंजाब को नुकसान होगा। टीम की सबसे बड़ी ताकत ऑलराउंडर सैम कुरेन रहेंगे। कुरेन को उसने 18 करोड़ 50 लाख रुपए में खरीदा है। वह गेंद और बल्ले से प्रभावी प्रदर्शन करने के लिए जाने जाते है। टीम के पास जिम्बाब्वे के ऑलराउंडर सिकंदर रजा भी हैं। रजा अच्छे बल्लेबाज होने के साथ ही ऑफ स्पिन गेंदबाजी भी हैं।

तेज गेंदबाजी की बात करें तो उसके पास बांए हाथ के अर्शदीप सिंह हैं। टीम को ऋषि धवन और लेग स्पिनर राहुल चहर से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी। केकेआर की बल्लेबाजी कप्तान राणा पर आधारित रहेगी। शुरुआती मैच में बांग्लादेश के शाकिब अल हसन और लिटन दास नहीं खेलेंगे। ऐसे में केकेआर का प्रदर्शन काफी हद तक आंद्रे रसेल और सुनील नारायण की वेस्टइंडीज की जोड़ी पर निर्भर करेगा। टीम के पास डेविड वाइसी और वेंकटेश अय्यर के रूप में पास अन्य स्तरीय ऑलराउंडर हैं। टीम की मजबूत गेंदबाजी इकाई उसकी ताकत रहेगी। उसके पास तेज गेंदबाज उमेश यादव के अलावा शारदुल ठाकुर और टिम साउथी हैं। स्पिनर के तौर पर शाकिब, नारायण और वरुण चक्रवर्ती स्पिन विभाग में जिम्मेदारी संभालेंगे।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

पंजाब किंग्सः शिखर धवन (कप्तान), अर्शदीप सिंह, बलतेज सिंह, राज बावा, राहुल चाहर, सैम कुरेन, ऋषि धवन, नाथन एलिस, हरप्रीत बराड़, हरप्रीत सिंह, वी. कावेरप्पा, मोहित राठी, प्रभसिमरन सिंह, भानुका राजपक्षे, एम शाहरुख खान, जितेश शर्मा, शिवम सिंह, मैथ्यू शॉर्ट, सिकंदर रजा, अथर्व तायडे

कोलकाता नाइट राइडर्स : नितीश राणा (कप्तान), वैभव अरोड़ा, लॉकी फर्ग्यूसन, हर्षित राणा, वेंकटेश अय्यर, एन जगदीसन, कुलवंत खेजरोलिया, लिटन दास, मनदीप सिंह, सुनील नारायण, रहमानुल्लाह गुरबाज, अनुकूल रॉय, आंद्रे रसेल, शाकिब अल हसन, रिंकू सिंह, टिम साउथी, सुयश शर्मा, शार्दुल ठाकुर, वरुण चक्रवर्ती, डेविड वाइसी, उमेश यादव

मियामी ओपन : अलकाराज और मेदवेदेव पुरुष एकल से सेमीफाइनल में पहुंचे

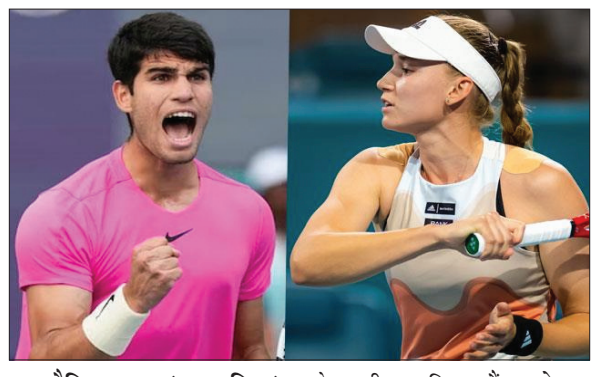

मैड्रिड (अल्बानिया) (एजेंसी)। मियामी गार्डन्स - शीर्ष रैंकिंग के टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अलकाराज ने मियामी ओपन के पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को आसानी से शिकस्त देकर अंतिम चार में जगह पक्की की।

स्पेन के इस खिलाड़ी ने एक घंटे 18 मिनट तक चले मुकाबले में 10वीं रैंकिंग पर काबिज फ्रिट्ज को 6-4 6-2 से मात दी। यह इस साल 19 मैचों में उनकी 18वीं जीत है। सेमीफाइनल में अलकाराज के सामने यानिक सिन्नर की चुनौती होगी।

पुरुषों के एक अन्य क्वार्टर फाइनल डेनियल मेदवेदेव अमेरिका के क्वालीफायर क्रिस यूबैंक्स को 6-3 7-5 से हराया। मेदवेदेव के सामने सेमीफाइनल में हमवतन कारेन खाचानोव की चुनौती होगी। खाचानोव ने फ्रांसिस्को सेरुंडोलो 6-3 6-2 से पराजित किया।

महिला वर्ग में एलिना रायबकिना ने सेमीफाइनल में जेसिका पेगुला को बारिश से प्रभावित मैच में 7-6(3) 6-4 से शिकस्त दी। फाइनल में उनके सामने 15वीं वरीयता प्राप्त पेत्रा क्रितोवा और गैरवरीय सोराना क्रिस्टी के बीच खेले जाने वाले सेमीफाइनल मुकाबले की विजेता की चुनौती होगी।

विराट ने रिचर्ड्स और तेंदुलकर को सर्वकालिक महान क्रिकेटर बताया

नई दिल्ली। आरसीबी के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने आपीएल के 16 वें सत्र की शुरुआत के अवसर पर वेस्टइंडीज के विवियन रिचर्ड्स और भारत के सचिन तेंदुलकर को सर्वकालिक महान क्रिकेटर बताया है। विराट के अनुसार इन दोनो ही ने अपने खेले से क्रिकेट को पूरी तरह से बदल दिया। आरसीबी द्वारा शेयर किए गए वीडियो में कोहली ने अपने सर्वकालिक खिलाड़ियों का नाम लेते हुए कहा, मैंने हमेशा दो नाम लिए हैं, तेंदुलकर और रिचर्ड्स। सचिन तो मेरे हीरो हैं। इन दोनों ने अपनी पीढ़ी में बल्लेबाजी में क्रांति लाकर क्रिकेट को पूरी तरह से बदल दिया था। ऐसे में मेरा मानना हा कि ये दोनो ही सबसे महान खिलाड़ी हैं।

आईपीएल के अपने पहले मैच में जीत के इरादे से उतरेगी सुपर जायंटस और कैपिटल्स

लखनऊ (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 16वें सत्र में शनिवार को होने वाले दूसरे मैच में लोकेश राहुल की लखनऊ सुपर जायंटस का मुकाबला दिल्ली कैपिटल्स से होगा। इस मैच में दोनो ही टीमें जीत से अपने आईपीएल अभियान की शुरुआत करने उतरेंगी। लखनऊ की कप्तान जहां लोकेश राहुल के पास है। वहीं दिल्ली की कमान ऑस्ट्रेलिया के डेविड वार्नर संभाल रहे हैं। दोनो ही विरोध बल्लेबाज अनुभवी हैं पर पिछले कुछ समय से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। ऐसे में इन दोनो पर ही अच्छे प्रदर्शन का दबावा होगा। राहुल को हाल ही में भारतीय टीम में उपकप्तान पद से भी हटा दिया गया था। पिछले काफी समय से वह बड़ी पारी भी नहीं खेल पाये हैं। ऐसे में उनके लिए टीम में अपनी जगह बनोय रखना भी कठिन हो रहा है। ऐसे में अब वह आईपीएल में बेहतर प्रदर्शन कर अपने नेतृत्व कौशल और बल्लेबाजी को साबित करना चाहेंगे।

लखनऊ की टीम पहली बार अपने घरेलू मैदान पर खेलेगी जिसका भी उसे लाभ होगा। राहुल की कप्तानी में टीम पिछले साल अपने पहले ही सत्र में प्लेऑफ में पहुंची थी हालांकि तब राहुल अच्छे फार्म में थे और उन्होंने जमकर रन बनाये थे पर इसबार हालात अलग हैं और ऐसे में राहुल को रन बनाकर अपने बल्ले से जवाब देना होगा। वहीं दूसरी ओर दिल्ली कैपिटल्स की टीम अपने नियमित कप्तान ऋषभ पंत के बिना खेल रही है। ऐसे में नये कप्तान वार्नर पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा। टीम के पास कप्तान के तौर पर वार्नर जैसा आक्रामक सलामी बल्लेबाज है पर उनका बल्ला पिछले कुछ समय से खामोश है। अब वार्नर सनराइजर्स हैदराबाद की तरह ही दिल्ली को भी खिताब दिलाना चाहेंगे। वार्नर की कप्तानी में ही सनराइजर्स ने एकबार खिताब जीता था।

दिल्ली के पास मिशेल मार्श जैसा बल्लेबाज है। मार्श ने भारत के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला में आक्रामक बल्लेबाजी की थी। वार्नर और सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ अगर टीम को तेज शुरुआत देने में विफल रहते है तो मार्श दो-तीन ओवरों में यह कमी पूरी कर सकत हैं। वहीं बल्लेबाज सरफराज खान को विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी भी निभानी होगी। टीम को युवा यश ढुल से अधिक अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। ऐसे में टीम को आखिरी ओवरों में अक्षर पटेल से अच्छी बल्लेबाजी की उम्मीद रहेगी। टीम के तेज गेंदबाज एनरिक नोर्किया और मुस्तफिजुर रहमान राष्ट्रीय टीम को सेवाएं देने के कारण इस मुकाबले में नहीं रहेंगे। दिल्ली के तेज गेंदबाजी विभाग में खलील अहमद और इशांत शर्मा जैसे गेंदबाज हैं। स्पिन की जिम्मेदारी अक्षर और कुलदीप यादव पर रहेगी। वहीं लखनऊ की बात करें तो राहुल के साथ पारी की शुरुआत को शुरुआती काइल मायर्स या दीपक हुड्डा कर सकते हैं। टीम को इस मैच में अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज क्विंटन डिकॉक की कमी खलेगी। डिकॉक राष्ट्रीय टीम को सेवाएं देने के कारण देर से भारत आयेंगे। टीम की तेज गेंदबाजी भी खास नहीं है। मोहसिन खान चोट के कारण शुरुआती मैचों के लिए बाहर हैं। मार्क वुड भी अकसर चोटिल होते रहते है ऐसे में आवेश खान और जयदेव उनादकट पर ही पूरी जिम्मेदारी होगी। टीम के पास हुड्डा के अलावा कृणाल पांड्या, कृष्णप्पा गौतम, प्रेरक मांकड़ के अलावा मार्कस स्टोइनिस, डेनियल सैम्स, मायर्स और रोमारियो शेफर्ड जैसे अच्छे ऑलराउंडर हैं। स्पिन की जिम्मेदारी रवि बिश्नोई और अमित मिश्रा पर रहेगी।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

दिल्ली कैपिटल्सः डेविड वार्नर (कप्तान), पृथ्वी शॉ , मिशेल मार्श, मनीष पांडे, रोवमैन पॉवेल, रिले रोसौव, सरफराज खान , फिल साल्ट , अभिषेक पोरेल , अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, ललित यादव, रिपल पटेल , इशांत शर्मा, चेतन सकारिया, खलील अहमद, अमन हकीम खान, प्रवीण दुबे, कमलेश नागरकोटी, यश ढुल, मुकेश कुमार, विक्की ओस्तवाल।

लखनऊ सुपर जायंटसः लोकेश राहुल (कप्तान), काइल मायर्स, दीपक हुड्डा, कुणाल पांड्या, अमित मिश्रा, निकोलस पूरन, नवीन उल हक, आयुष बडोनी, आवेश खान, करण शर्मा, युद्धवीर चरक, यश ठाकुर, रोमारियो शेफर्ड, मार्क वुड , स्वप्निल सिंह, मनन वोहरा, डेनियल सैम्स, प्रेरक मांकड़, कृष्णप्पा गौतम, जयदेव उनादकट, मार्कस स्टोइनिस, रवि बिश्नोई, मयंक यादव।

रोड्स ने जडेजा को सर्वश्रेष्ठ फील्डर बताया

जोहांसबर्ग। दक्षिण-अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर जोंटी रोड्स को विश्व का सर्वश्रेष्ठ फील्डर माना जाता है। रोड्स के संन्यास लेने के बाद कोई भी उनके स्तर का फील्डर नहीं हुआ है। रोड्स के बाद विश्व क्रिकेट में कई अच्छे फील्डर हुए हैं पर इनमें से सबसे श्रेष्ठ कौन है। इसको लेकर संशय बना हआ था। वहीं अब रोड्स ने अपने बयान से स्थिति स्पष्ट कर दी है। रोड्स के अनुसार जडेजा अभी सर्वश्रेष्ठ फील्डर हैं। इस पूर्व क्रिकेटर से जब पूछा गया कि वह विश्व क्रिकेट में किसे सर्वश्रेष्ठ फील्डर मानते हैं तो उन्होंने कहा, अभी केवल एक ही है, जडेजा। रोड्स ने यह भी कहा कि आईपीएल के बाद से ही लोगों ने फील्डिंग को गंभीरता से लेना शुरु किया है। साल 2008 में शुरुआत के बाद से ही अब तक हुए मुकाबलों में फील्डिंग का स्तर लगातार ऊपर आता रहा है। खिलाड़ियों ने बाउंड्री लाइन कैच से लेकर सर्कल के अंदर कुछ शानदार कैच लिए हैं। इस दौरान दर्शकों कों कई शानदार कैच देखने को मिले हैं। रोड्स ने कहा, आईपीएल शुरू होने के बाद ही लोगों ने वास्तव में फील्डिंग पर ध्यान देना शुरू किया। इससे पहले हर टीम के पास फील्डिंग कोच नहीं थे क्योंकि 50 ओवर के मैचों में पर्याप्त समय रहता था। आपके पास 3-4 अच्छे फील्डर थे जिनसे काम हो जाता था। आईपीएल शुरू होने के बाद फील्डिंग में निरंतर बेहतर काम हुआ है।

गुजरात टाइटंस को जीत दिलाना रहेगा लक्ष्य : मावी

नई दिल्ली। गुजरात टाइटन्स के तेज गेंदबाजी ने कहा है कि उनका लक्ष्य इस सत्र में अपनी टीम को जीत दिलाने में सहायत करना है। मावी को गुजरात टाइटंस ने छह करोड़ में खरीदा है। इस खिलाड़ी ने कहा कि जब इस सत्र में नीलामी बीच में रुक गयी थी तब वह हैरान हो गये थे। उस समय मावी पर 1.10 करोड़ रुपए की बोली लगी थी। मावी ने नीलामी के लिए 40 लाख रुपये के आधार मूल्य पर अपने को रजिस्टर करवाया था। टाइटन्स द्वारा साझा किए गए एक वीडियो में इस तेज गेंदबाज ने कहा, पिछले साल की तरह हम यहां जीते थे। अब जब मैं उनके साथ जुड़ गया हूं, तो मैं फिर से चैंपियन बनने में सहायता करना चाहता हूं। नीलामी के दौरान मैं उत्तर प्रदेश की ओर से रणजी ट्रॉफी मैच खेल रहा था। इस दौरान मेरी नीलामी 1.10 करोड़ पर रुकी और तब मैं सोच रहा था कि यह इतनी जल्दी क्यों रुक गई। इस युवा खिलाड़ी ने कहा, मैं गुजरात टाइटन्स द्वारा चुना जाना चाहता था क्योंकि मैं उनके साथ खेलने के लिए उत्साहित था। मैंने सुना था कि यहां का प्रबंधन और कप्तान बहुत अच्छे हैं। मैं उन सभी से पहले मिल चुका हूं। टीम का स्वभाव और माहौल वास्तव में अच्छा है, इसलिए मैं जीटी द्वारा चुना जाना चाहता था। 2018 में आईपीएल की शुरुआत करने के बाद से मावी 2023 की नीलामी से पहले रिलीज होने से पहले कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) टीम का हिस्सा थे। उन्होंने अब तक 32 आईपीएल मैच खेले हैं और 30 विकेट लिए हैं।

आईपीएल में असफल हुए तो राहुल का करियर खतरे में पड़ेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 16 वें सत्र में लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान लोकेश राहुल पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा। इसका कारण यह है कि राहुल पिछले काफी समय से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में नाकाम रहे हैं। इसी कारण टीम में उनकी जगह भी खतरे में पड़ गयी है। इसके साथ ही भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सालाना अनुबंध में उन्हें डिमोट करते हुए ए से बी ग्रेड में कर दिया है। इन हालातों में अब अगर वह आईपीएल में भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं तो उन्हें टीम में जगह भी नहीं मिल पायेगी। इसके साथ ही आगामी विश्वकप के लिए भी उनकी संभावनाएं कम होंगी। राहुल के लिए साल 2023 अब तक अच्छा नहीं रहा है। साल 2022 में उन्हें टीम इंडिया के भविष्य के कप्तान के तौर पर देखा जा रहा था पर इस साल उन्हें हाथ से उपकप्तानी भी निकल गयी।

ऐसे में सवाल ये है कि क्या राहुल बेहतर प्रदर्शन कर अपनी टीम को प्रेरित करते हुए आईपीएल ट्रॉफी जिताने में कामयाब हो पाएंगे? राहुल की अक्सर आलोचना इस बात को लेकर होती है कि उनके रन आईपीएल में उनके लिए ज्यादा काम आते हैं बजाए उनकी टीम के। पंजाब की टीम में रहते हुए उन्होंने जमकर रन बनाये थे पर टीम को उसका लाभ नहीं मिला था। लखनऊ एक नई टीम है और पिछले सत्र में शुरुआत में बेहतरीन खेल दिखाने के बावजूद फाइनल तक नहीं पहुंच पायी थी। ऐसे में राहुल के लिए जरूरी होगा कि वो ना सिर्फ अपने बल्ले से रन बनाएं, बल्कि बेहतर स्ट्राइक रेट से रन बनाए, जिसके लिए वो अक्सर आलोचकों का शिकार बनते हैं। इसके बाद अगर उनकी टीम फाइनल में पहुंचती है या फिर ट्रॉफी जीतती है तब उनके लिए भारतीय टीम में जगह बनाना आसान होगा।

वनडे विश्व कप के मैच बांग्लादेश में खेले जाने के बारे में अभी तक कोई चर्चा नहीं हुई: पीसीबी

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने शुक्रवार को स्पष्ट किया कि उसके अध्यक्ष नजम सेठी ने आईसीसी बोर्ड की बैठक में कभी यह विचार नहीं रखा कि उनकी पुरुष टीम भारत के बजाय बांग्लादेश में अपने विश्व कप मैच खेलने की इच्छुक है। 'पीटीआई-भाषा' ने 29 मार्च को ही खबर दी थी कि आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) ने इस बात से इनकार कर दिया था कि उसके मंच पर कभी इस तरह की कोई भी चर्चा हुई थी। आईसीसी ने कहा था कि बांग्लादेश किसी भी विश्व कप मैच की मेजबानी के लिए भी दावेदार नहीं है, क्योंकि बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) ने आश्वासन दिया था कि पाकिस्तान टीम के लिए वीजा की समस्या नहीं होगी। पीसीबी ने स्पष्ट किया कि टूर्नामेंट के 'हाइब्रिड मॉडल' की अवधारणा सिर्फ एशिया कप से संबंधित थी, क्योंकि भारतीय टीम पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगी।

सेठी ने गुरुवार को रावलपिंडी/इस्लामाबाद में मीडिया से की गयी बातचीत का जिक्र करते कहा कि उन्होंने एशिया कप के लिए एसीसी (एशियाई क्रिकेट परिषद) के अधिकारियों के समक्ष पेश किए गए 'हाईब्रिड मॉडल' के बारे में मीडिया को जानकारी दी थी ताकि बीसीसीआई के टीम को पाकिस्तान नहीं भेजने के फैसले के बाद हुए गतिरोध को खत्म किया जा सके। पीसीबी के बयान के मुताबिक, ''भारत के मैच तटस्थ स्थान पर और बाकी पाकिस्तान में खेलने का प्रस्ताव एसीसी में चर्चा के अधीन है।'' सेठी ने कहा कि मीडिया के एक वर्ग ने उनकी बात को गलत तरीके से पेश किया।

उन्होंने इस विज्ञप्ति में कहा, '' गुरुवार की मीडिया बातचीत के दौरान किसी भी स्तर पर मैंने आईसीसी या पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 पर कोई टिप्पणी नहीं की, जो अक्टूबर में निर्धारित है। इस मामले पर अब तक किसी भी आईसीसी मंच पर चर्चा नहीं की गई है।' 'पीटीआई-भाषा' ने बुधवार को आईसीसी के सूत्रों से बात की थी जिन्होंने उल्लेख किया था कि इस मामले को न तो उठाया गया था और न ही अनौपचारिक रूप से चर्चा की गई थी और यह 'सिर्फ कल्पना' है। पीसीबी ने मीडिया विज्ञप्ति के जरिए अपने एक स्थानीय अंग्रेजी समाचार पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा, '' पीसीबी इस बात से निराश है कि अंग्रेजी भाषा के एक प्रमुख अखबार ने सेठी की टिप्पणियों को गलत तरीके से पेश किया, गलत व्याख्या की और यह धारणा दी कि पीसीबी के 'हाइब्रिड मॉडल' को आईसीसी में पेश किया गया और उस पर चर्चा की गई, जो कि तथ्यात्मक रूप से गलत है।'

हॉकी इंडिया ने राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के लिए घोषित किया कोर समूह

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने बेंगलुरू में शनिवार से भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) केंद्र में शुरू हो रहे राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के लिए 39 सदस्यीय पुरुष हॉकी के कोर समूह की घोषणा कर दी है। राष्ट्रीय टीम का चयन कोर समूह में से ही होता है। यह प्रशिक्षण शिविर शिविर 21 मई तक चलेगा। कोर टीम अंतरिम कोच डेविड जॉन, बीजे करियप्पा और शिवेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में काम करेगी। इस कोर समूह में से ही एफआईएच हॉकी प्रो लीग के लिए टीम को चयन होगा। इसके बाद टीम यूरोप दौरे पर जाएगी। इसमें टीम को एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2022-2023 सत्र के शेष मैचों में बेल्जियम, ग्रेट ब्रिटेन, नीदरलैंड और अर्जेंटीना से खेलना होगा। राउरकेला में हाल ही में विश्व चैंपियन जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली जीत से भारतीय टीम अभी एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2022-23 सत्र में शीर्ष पर है। कोर समूह में कृष्ण बहादुर पाठक, पीआर श्रीजेश, सूरज करकेरा, पवन मलिक, प्रशांत कुमार, जरमनप्रीत सिंह, सुरेंद्र कुमार, हरमनप्रीत सिंह, वरुण कुमार, अमित रोहिदास, गुरिंदर सिंह, जुगराज सिंह, मनदीप मोर, नीलम संजीप जेस, संजय, यशदीप सिवाच और दिप्सन तिर्की के अलावा मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, मोइरंगथम रबीचंद्र सिंह, शमशेर सिंह, नीलकांत शर्मा, राजकुमार पाल, सुमित, आकाशदीप सिंह, गुरजंत सिंह, मो. राहील मौसीन, मनिंदर सिंह, एस कार्थी, मनदीप सिंह, ललित कुमार उपाध्याय, अभिषेक, दिलप्रीत सिंह, सुखजीत सिंह, सिमरनजीत सिंह, शिलानंद लाकड़ा, मंजीत, पवन राजभर जैसे खिलाड़ी शामिल हैं।

एएफसी अंडर-17 एशियाई कप फुटबॉल के लिए ड्रॉ निकाला गया

-भारत को जापान, वियतनाम के साथ रखा गया

नई दिल्ली। 15 जून से दो जुलाई तक थाईलैंड में होने वाले एएफसी अंडर-17 एशियाई कप फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए भारतीय टीम को ग्रुप डी में जापान, वियतनाम और उज्बेकिस्तान के साथ रखा गया है। एएफसी अंडर-17 एशियाई कप का आयोजन बैंकॉक में चार अलग-अलग स्टेडियमों में किया जाएगा। इस टूर्नामेंट के लिए ड्रॉ समारोह का आयोजन बैंकॉक में किया गया है। इस टूर्नामेंट के प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीम नॉकआउट चरण में पहुंचेंगी। वहीं सेमीफाइनल में पहुंचने वाली चार टीमों को पेरू में होने वाले 2023 फीफा अंडर-17 विश्व कप में प्रवेश मिलेगा। भारतीय टीम के मुख्य कोच बिबियानो फर्नांडिस ने कहा, ''ड्रॉ में हमें जिस ग्रुप में रखा गया है उसे लेकर हम सभी उत्साहित हैं। हमें इस टूर्नामेंट को लेकर सभी खिलाड़ी उत्साहित हैं। हर फुटबॉलर हर स्तर पर सर्वश्रेष्ठ टीम के खिलाफ खेलना चाहता है और जापान निश्चित तौर पर अभी एशिया की सबसे अच्छी टीमों में से एक है।'' उन्होंने कहा, ''हमने पहले भी वियतनाम और उज्बेकिस्तान जैसी टीमों के खिलाफ खेला है। हमें उन मुकाबलों में अच्छे परिणाम मिले थे जिससे हमें इस टूर्नामेंट में भी बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। हमारा लक्ष्य फीफा अंडर-17 विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय टीम बनना है।''

महिला ग्रां प्री: टूर्नामेंट से हटीं ग्रैंडमास्टर अब्दुमालिक, उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे आयोजक

नई दिल्ली (एजेंसी)। किसी टूर्नामेंट को सफल बनाना आयोजकों की जिम्मेदारी रहती है, लेकिन मेहमान खिलाड़ी जब प्रबंधन द्वारा की गई तैयारियों से खुश ना दिखें तो टूर्नामेंट विवादित रूप ले लेता है। दिल्ली में फिडे महिला ग्रां प्री का तीसरा चरण भारत में पहली बार ग्रां प्री आयोजित किया जा रहा है। लेकिन यह विवादित रहा। कजाकिस्तान की एक ग्रैंडमास्टर झांसाया अब्दुमालिक द्वारा आयोजकों पर खराब व्यवहार का आरोप लगाया गया, जिसके बाद वह टूर्नामेंट से बाहर हो गईं। टूर्नामेंट में 12 खिलाड़ी शामिल थे, लेकिन अब 10 प्रतिभागी हैं, जो 5 अप्रैल तक चलेगा।

होटल के स्थान से नाखुश खिलाड़ी

कजाकिस्तान की पहली महिला ग्रैंडमास्टर बनने वाली 23 वर्षीय अब्दुमालिक ने कहा कि वह पीछे हट गई क्योंकि स्थानीय आयोजकों ने इस आयोजन के लिए पर्याप्त तैयारी नहीं की थी। उनकी मुख्य शिकायत यह थी कि अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (एआईसीएफ) ने उन्हें दिल्ली हवाईअड्डे पर रिसीव करने और कड़कड़डूमा के लीला एंबियंस होटल में उनके आने-जाने की व्यवस्था करने के लिए किसी को नहीं भेजा, जहां सभी खिलाड़ियों को टूर्नामेंट के लिए रखा गया है। उसने आयोजकों पर यह भी आरोप लगाया है क कि वह होटल के स्थान से नाखुश थी और उसके कमरे में कूड़ा भी पड़ा था।

गलतियां छुपाते नजर आए निदेशक

वहीं महिला ग्रां प्री के टूर्नामेंट निदेशक भरत सिंह चौहान प्रबंधन की गलतियों को छुपाते दिखे। भरत ने कहा, 'उसकी उड़ान उम्मीद से थोड़ी पहले उतरी। जो लोग उन्हें रिसीव करने आए थे, वे एयरपोर्ट पर उनसे नहीं मिल सके। उन्हें हुई किसी भी असुविधा के लिए हमने माफी मांगी है। उसने यह भी शिकायत की कि होटल शहर के बाहरी इलाके में है। लेकिन यह एक पांच सितारा होटल है। विश्व चैंपियनशिप के लिए आए सभी मुक्केबाज वहीं ठहरे हुए थे। मैं इसमें आगे कुछ नहीं कहना चाहता क्योंकि टूर्नामेंट शुरू हो चुका है।'

दुनिया में 13वें स्थान पर काबिज अब्दुमालिक ने आगे आरोप लगाया कि खिलाड़ियों को हवाईअड्डे से होटल तक आधिकारिक परिवहन उपलब्ध नहीं कराया गया। जब वे आखिरकार होटल पहुंचे, तो उन्हें बताया गया कि कमरे तैयार नहीं हैं। भरत चौहान ने अब्दुमालिक के आरोपों पर जवाब देते हुए कहा, 'टूर्नामेंट के लिए मेरु कैब्स के साथ हमारा अनुबंध है। अन्य खिलाड़ियों को कैब में होटल ले जाया गया। और जहां तक कमरों का संबंध है, प्रत्येक होटल में चेक-इन का समय होता है। हो सकता है कि कोई खिलाड़ी जल्दी आ गया हो और कमरा तैयार होने के लिए कुछ देर इंतजार करना पड़ा हो।'

रविवार को, जब टूर्नामेंट का पहला दौर आयोजित किया गया था, अब्दुमालिक के निराश होने से पैदा हुए असंतुलन के कारण एलिज़ाबेथ पैहत्ज भी भारत की आर वैशाली के खिलाफ अपने खेल के लिए नहीं आई थी। पैहत्ज ने चेसबेस इंडिया से कहा, 'मैं यह स्वीकार नहीं कर सकती कि हर खिलाड़ी एक जैसी शर्तों के साथ टूर्नामेंट की शुरुआत नहीं करती है। एकल खिलाड़ी के अल्टीमेटम के कारण रंगों के उचित वितरण के साथ नई जोड़ियों का इच्छित समाधान विफल हो गया। भले ही मुझे 6 गोरे और 4 अश्वेत मिलेंगे, यह अन्य खिलाड़ियों के लिए अनुचित है। मैं सभी के लिए एक निष्पक्ष और समान टूर्नामेंट चाहती थी।'

फिडे के अध्यक्ष ने मांगी माफी

कुछ प्रतिभागियों द्वारा फिडे को घटना के बारे में अपनी चिंताएं व्यक्त करने के बाद, अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ के अध्यक्ष अरकडी ड्वोर्कोविच ने कहा, 'अंतर्राष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) की ओर से, मैं महिला ग्रैंड प्रिक्स के गलत संचालन के लिए माफी मांगता हूं। । आपके द्वारा अनुभव की गई समस्याओं और असुविधाओं के लिए हमें गहरा खेद है, जिसके कारण एक खिलाड़ी टूर्नामेंट से हट गया। सभी तर्कों को ध्यान में रखते हुए, हमने भारत में महिला ग्रां प्री टूर्नामेंट को जारी रखने का फैसला किया है। हम महिलाओं के टूर्नामेंट के आयोजन के लिए दिशानिर्देशों और मानकों की पूरी तरह से समीक्षा करेंगे और खिलाड़ियों के साथ संबंध मजबूत करना सुनिश्चित करेंगे, साथ ही साथ इवेंट-आयोजन टीम की दक्षता में और सुधार करेंगे।'

रोहित अपने फैसले स्वयं लेते थे : कुंबले

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय कप्तान अनिल कुंबले ने कहा है कि जब साल 2013 के सत्र में वह मुंबई इंडियंस के मेंटर बने थे। तब रोहित शर्मा को टीम का कप्तान बनाया गया था। कुंबले के अनुसार रोहित अपने फैसले स्वयं लेते थे ओर जो भी कहना होता बिना डरे कह देते थे। कुंबले के अनुसार वह अनुभवी खिलाड़ियों की सुनते जरूर थे पर जो सही लगता वही करते थे। कुंबले ने कहा, वह कहने से नहीं डरते थे कि उन्हें क्या कहना था। उनके पास बहुत अनुभव था और वह उनके पास भी पहुंचे, लेकिन फिर अपने फैसले स्वयं लिए। एक कप्तान से आप यही चाहते हैं। कुंबले ने 2017 में रोहित के नई टीम की कप्तानी करने के बारे में कहा कि तब एक नई टीम थी और कम स्कोर का बचाव करने के मामले में हमने उसे जिस तरह की कप्तानी करते देखा। उसी से नेतृत्व क्षमता सामने आयी। कुंबले ने यह भी कहा कि रोहित को चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करते देखना चाहते हैं।

उर्फी जैसा कॉन्फिडेंस मेरे पास नहीं : करीना

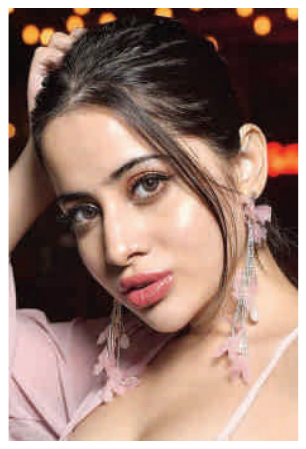

उर्फी जावेद अपने फैशन सेंस को लेकर हमेशा सुर्खियों में रहती हैं। रणवीर सिंह समेत कई स्टार्स उर्फी के फैशन को कॉम्प्लिमेंट दे चुके हैं। वहीं अब बॉलीवुड की फैशन आइकॉन करीना कपूर ने भी उर्फी जावेद के फैशन की तारीफ की है। करीना कपूर का कहना है कि उनको उर्फी जावेद का स्टाइल पसंद है। एक इंटरव्यू में करीना कपूर ने कहा, मेरे में उर्फी जावेद जितनी हिम्मत नहीं है। वो लड़की सच में बहुत बहादुर है। वो अपने हिसाब से लुक्स कैरी करती है। लोग उर्फी जावेद को देखना पसंद करते है। फैशन में अपने बोलने और एक्सप्रेस करने की आजादी मिलती है। मुझे लगता है कि उर्फी जावेद का कॉन्फिडेंस कमाल का है। करीना ने कहा, उर्फी अपने हर एक लुक में काफी कूल लगती है। उनका जो मन करता है वो वैसी ड्रेस पहनती है। फैशन इसी का तो नाम है। जो भी पहनो पूरे कॉन्फिडेंस के साथ पहनो। मैं उर्फी जावेद के कॉन्फिडेंस की दाद देती हूं। करीना से तारीफ मिलने के बाद उर्फी जावेद ने बेबो का शुक्रिया भी अदा किया है। उर्फी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा, क्या करीना ने कहा कि वह मुझे पसंद करती है। वाह, मुझे सच में विश्वास नहीं हो रहा है कि ऐसा सच में हो रहा है। मुझे चार पांच दिन चाहिए इस बात पर विश्वास करने के लिए।

रवि तेजा की फिल्म टाइगर नागेश्वर राव

20 अक्टूबर को होगी रिलीज

स्टार रवि तेजा की आगामी फिल्म टाइगर नागेश्वर राव, जिसमें अभिनेता अनुपम खेर भी हैं, 20 अक्टूबर को रिलीज होगी। अनुपम ने ट्विटर पर फिल्म की रिलीज की तारीख का खुलासा करते हुए एक पोस्टर साझा किया। कैप्शन में अनुपम ने लिखा, मेरी तेलुगू फिल्म हैसटैग टाइगर नागेश्वर राव 20 अक्टूबर 2023 को रिलीज के लिए तैयार है। रवि तेजा की पहली पैन-इंडिया फिल्म टाइगर नागेश्वर राव वामसी के निर्देशन में है। टाइगर नागेश्वर राव कुख्यात चोर की बायोपिक है और 70 के दशक में स्टुअर्टपुरम नामक गांव में स्थापित है। अभिनेता के लिए पहले कभी नहीं देखे गए किरदार में रवि तेजा की बॉडी लैंग्वेज, बोलने का अंदाज और गेटअप बिल्कुल अलग है। नूपुर सनन और गायत्री भारद्वाज को फिल्म में रवि तेजा के साथ प्रमुख महिलाओं की भूमिका निभाने के लिए चुना गया है।

तलवार चलातीं नजर आएंगी ऐश्वर्या

पोन्नियिन सेलवन 2 ट्रेलर में राजकुमारी नंदिनी यानी ऐश्वर्या तलवार चलाती नजर आ रही हैं। उनके चेहरे पर तेज और अंदाज हैरान कर देता है। नंदिनी ने चोल साम्राज्य को खत्म करने का प्रण लिया था और दूसरे पार्ट में वह उसी प्रण को पूरा करने की कोशिश करती नजर आ रही है। ट्रेलर देखकर साफ है कि इस बार सिंहासन के लिए चोल साम्राज्य में तांडव मचेगा। लेकिन यह तांडव क्या रूप लेगा, यह तो फिल्म देखने पर ही पता चलेगा। लेकिन इतना तो साफ है कि पोन्नियिन सेलवन 2 में सिंहासन के लिए होने वाला युद्ध अपनी चरम सीमा पर होगा। यह किसे लील जाएगा और किसके फायदा पहुंचाएगा? नंदिनी और आदित्य का क्या होगा? यह फिल्म देखकर ही पता चलेगा। पोन्नियिन सेलवन 2 का ट्रेलर देख कर कोई एक्साइटेड हो गया है और बड़ी बेसब्री से फिल्म की रिलीज का इंतजार कर रहा है। मणिरत्नम के निर्देशन में बनी इस फिल्म में ऐश्वर्या, कार्ति और विक्रम के अलावा शोभिता धुलिपाला, जायम रवि, तृषा कृष्णन, ऐश्वर्या लक्ष्मी और प्रकाश राज समेत वो सभी सितारे नजर आएंगे, जो पहले पार्ट में भी थे। यह फिल्म 28 अप्रैल को थिएटर्स में रिलीज होगी। तमिल और तेलुगू भाषा के अलावा इसे हिंदी में भी रिलीज किया जाएगा।

यशराज के स्पाई यूनिवर्स में होगी टाइगर वर्सेज पठान की एंट्री!

बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान की हालिया रिलीज फिल्म पठान में सलमान खान कैमियो करते नजर आए थे। वहीं अब शाहरुख खान, सलमान की अपकमिंग फिल्म टाइगर 3 में कैमियो करते दिखेंगे। इसी बीच खबर आ रही है कि यशराज फिल्म्स अपने स्पाई यूनिवर्स की अगली फिल्म टाइगर वर्सेज पठान की प्लानिंग कर रहा है। इस फिल्म में शाहरुख और सलमान एक दूसरे से भिड़ते दिखाई देंगे। खबरों के अनुसार यशराज फिल्म्स ने सलमान खान के साथ एक था टाइगर से अपने स्पाई यूनिवर्स में सलमान खान की एंट्री की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्म वॉर से रितिक रोशन और फिल्म पठान से शाहरुख खान की स्पाई यूनिवर्स में एंट्री कराई। यशराज फिल्म्स की ये सभी फिल्में सफल रही है। अब यशराज पर्दे पर शाहरुख और सलमान के साथ टाइगर वर्सेज पठान की भिड़ंत कराने जा रहा है। खबरों के अनुसार सलमान की टाइगर 3 की रिलीज के बाद जनवरी 2024 में इसकी शूटिंग शुरू होगी। रिपोर्ट के मुताबिक, टाइगर वर्सेज पठान में शाहरुख और सलमान के बीच ऐसा खतरनाक फेस-ऑफ होगा। फिल्म की प्लानिंग और तैयारी बड़े स्तर पर चल रही है, लेकिन मेकर्स इसे लेकर अभी चुप हैं। यशराज फिल्म्स चाहता है कि वह टाइगर वर्सेज पठान की अनाउंसमेंट भव्य अंदाज में करे।

शाहरुख खान की जवान में नयनतारा का दिखेगा बोल्ड लुक

16 साल बाद पर्दे पर दिखेगा एक्ट्रेस का बिकिनी अवतार! बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान फिल्म पठान की सक्सेस के बाद अब अपने अगले प्रोजेक्ट की शूटिंग में व्यस्त हो गए हैं। शाहरुख साउथ निर्देशक एटली कुमार की जवान और राजकुमार हिरानी की फिल्म डंकी में नजर आने वाली हैं। फिल्म जवान में शाहरुख के साथ साउथ एक्ट्रेस नयनतारा नजर आने वाली हैं। नयनतारा की यह बॉलीवुड डेब्यू फिल्म है, जिसके लिए वह काफी ज्यादा एक्साइटेड हैं। बीते काफी समय से खबर आ रही है कि पठान में दीपिका पादुकोण के बिकिनी सीन की तरह ही जवान में नयनतारा स्क्रीन पर बिकिनी में काफी बोल्ड अवतार में नजर आएंगी। बताया जा रहा है कि जवान में नयनतारा स्विमसूट में एक सीन ठीक उसी अंदाज में शूट करेंगी जैसा दीपिका पादुकोण ने पठान में किया था। खबरों के अनुसार नयनतारा को बिकिनी पहनने में कोई दिक्कत नहीं है और वो पहले भी कई फिल्मों में ऐसा कर चुकी हैं। हालांकि नयनतारा पिछले 16 सालों से कभी फिल्मों में बिकिनी में नहीं नजर आई हैं। आखिरी बार साल 2007 में बिल्ला में नयनतारा का बोल्ड अंदाज सिने प्रेमियों को नजर आया था। लेकिन अब जवान की कहानी के अहम हिस्से के लिए नयनतारा ने ऐसा करना स्वीकार कर लिया है। फिल्म जवान में शाहरुख खान और नयनतारा के अलावा विजय सेतुपति भी अहम भूमिका में नजर आएंगे। वहीं दीपिका पादुकोण भी फिल्म में अहम कैमियो करते दिखाई देंगी। फिल्म जवान इस साल 2 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है।

अजय देवगन को तलाक देना चाहती थीं काजोल

इस एक्ट्रेस की वजह से टूटने की कगार पर पहुंच गया था घर

बॉलीवुड स्टार्स के लिए अफेयर्स और लिंकअप की अफवाहें कोई नई नहीं हैं. आए दिन हमारे सामने ऐसी खबरें आती रहती हैं, जो फैन्स को हैरत में डाल देती हैं. हालांकि बॉलीवुड में शाहरुख खान-गौरी खान, अजय देवगन-काजोल और रितेश देशमुख-जेनेलिया देशमुख जैसे कपल्स भी हैं, जिन्होंने फैंस के सामने मिसाल कायम की है, कि एक खुशहाल शादी कैसी होती है. लेकिन हर रिश्ता परफेक्ट नहीं होता है? इनमें कई उतार-चढ़ाव होते हैं. ऐसा ही कुछ बी-टाउन के फेवरेट कपल काजोल और अजय देवगन के साथ हुआ.

अजय देवगन को तलाक देना चाहती थी काजोल

अजय देवगन और काजोल बॉलीवुड के सबसे चहेते कपल्स में से एक हैं, लेकिन एक वक्त ऐसा भी था, जब इनके रिश्ते में भी एक मुसीबत आ गई थी, जिसका सामना कपल ने एक बॉस की तरह किया. कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अजय देवगन कंगना रनौत के साथ अपनी बढ़ती नजदीकियों को लेकर सुर्खियां बटोर चुके थे. जाहिर तौर पर उनकी शादी में समस्याएं तब शुरू हुईं, जब अजय कंगना के साथ वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई की शूटिंग कर रहे थे. उसी दौरान दोनों करीब आ गए. कहा जा रहा था कि उस वक्त अजय और काजोल के बच्चे न्यासा और युग पैदा हुए थे.

काजोल ने दी थी घर छोड़ने की धमकी

हालांकि, जब काजोल को कथित तौर पर इसके बारे में पता चला और उन्होंने उन्हें छोड़ने की धमकी दी. काजोल ने अपने बच्चों के साथ घर छोड़ने की धमकी दी थी. बाद में एक इंटरव्यू के दौरान अजय ने एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स के बारे में बात की थी. रिपोर्ट के अनुसार, अजय ने कहा, मैं यह नहीं कहता कि एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स नहीं होते हैं, लेकिन कभी-कभी मीडिया दो लोगों को एक साथ देखकर गलत व्याख्या करता है. मैं कभी किसी को अपना नाम किसी के साथ जोड़ने की इजाजत नहीं देता. मुझे अपना काम पसंद है और मैं सीधे घर आ जाता हूं.

काजोल-अजय देवगन की लवस्टोरी

फिलहाल काजोल और अजय देवगन खुशी-खुशी अपनी मैरिड लाइफ एंजॉय कर रहे हैं. अजय और काजोल ने गुंडाराज, इश्क, दिल क्या करे, राजू चाचा, प्यार तो होना ही था और हाल ही में 2020 की पीरियड ड्रामा फिल्म तान्हाजी- द अनसंग वॉरियर जैसी कई फिल्मों में एक साथ अभिनय किया है. उन्होंने 1999 में शादी की, और 2003 में एक बेटी, न्यासा, और 2010 में एक बेटे, युग का स्वागत किया. अजय ने 1991 की फिल्म फूल और कांटे से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की और वर्षों में कई सफल फिल्मों में अभिनय किया, जिनमें दिलवाले (1994), इश्क (1997), हम दिल दे चुके सनम (1999), द लीजेंड ऑफ भगत सिंह शामिल हैं। (2002), वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई (2010), और गोलमाल और सिंघम श्रृंखला में देखा गया. अब एक्टर भोला में नजर आने वाले है.

गुमराह से एक्टिंग की शुरूआत करेंगी चाहत

विज्ञापन और थिएटर के साथ शोबिज में अपना करियर शुरू करने वाली एक्ट्रेस चाहत विग आदित्य रॉय कपूर और मृणाल ठाकुर अभिनीत फिल्म गुमराह से अभिनय की शुरूआत करने जा रही हैं। एक्ट्रेस ने बताया कि कैसे उन्हें यह अवसर मिला, साथ ही उन्होंने पहली बार कैमरे का सामना करने की चुनौतियों के बारे में भी बात की। चाहत ने व्हिस्लिंग वुड्स इंटरनेशनल संस्थान से एंक्टि की फॉर्मल ट्रेनिंग ली और बाद में यहूदी की लड़की नामक प्ले भी किया। हालांकि, शुरूआत में एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में चीजें उनके लिए काम नहीं कर रही थीं और कई प्रोजेक्ट्स के लिए ऑडिशन देने के बाद, उन्होंने आखिरकार यह फिल्म हासिल की, जो एक क्राइम थ्रिलर है, जिसका निर्देशन वर्धन केतकर ने किया है। अपने पहले प्रोजेक्ट के बारे में बात करते हुए, उन्होंने साझा किया मुझे एक प्रोजेक्ट मिला और अज्ञात कारणों से इसे खो दिया, इसलिए मैं एक ऐसे फेज में थी, जहां मैं आंतरिक रूप से संघर्ष कर रही थी। मुझे मुकेश छाबड़ा कास्टिंग कंपनी से फोन आता है कि मुझे गुमराह के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया है और निर्देशक वर्धन केतकर अगले दिन मुझसे मिलना चाहते हैं, मैं उनसे मिलने गयी और इस तरह मुझे यह प्रोजेक्ट मिला। अपनी भूमिका पर, उन्होंने कहा कि यह एक चुनौतीपूर्ण भूमिका है और कहा- कंफर्ट जोन से बाहर सिनेमा की दुनिया में कदम रखना एक वास्तविक अनुभव रहा है। एक्ट्रेस ने कहा, चुनौती फिल्म निर्माण की दुनिया में सहज महसूस करने और मृणाल ठाकुर और आदित्य रॉय कपूर जैसे शानदार कलाकारों के आसपास नर्वस न होकर अपने किरदार को अच्छे तरीके से निभाने की थी। इसके लिए मेरी तैयारी खुद को याद दिलाना था कि मैं एक फिल्म स्कूल से आयी हूं, मैंने एक एक्टर के रूप में प्रशिक्षण लिया है, मैंने इसकी स्टडी की है, मैं टेक्नीक जानती हूं और मुझे अपने आप पर भरोसा करना चाहिए। आदित्य और मृणाल के साथ अपने काम के अनुभव को साझा करते हुए, उन्होंने कहा- मैं भाग्यशाली रही हूं, मेरा अनुभव बहुत शानदार रहा। आदित्य और मृणाल दोनों के साथ काम करना यादगार है, दोनों ईमानदारी और जमीन से जुड़े हैं। उनके साथ सीन शूट करने में बहुत मजा आया।